

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

لنبتی سیتنیر نام

۱۰ روپیہ سنہ ۱۹۸۱ سود ازراہ

[illegible]

قلم درویش [illegible]

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

بشن سہسرنام سٹیک بھاشا اردو

رجسٹری شدہ



مطبع افتخار دہلی میں منشی محمد ابراہیم کے اہتمام سے چھپا

قیمت فی جلد ۵

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri



CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

श्रीगणेशाय नमः

[अ]थ विष्णुसहस्रनाम सटीक लिख्यते



श्लोक

यस्य स्मरण मात्रेण जन्म संसार बंधनात्। विमुच्यते नमस्तस्मै विष्णवे प्रभविष्णवे ॥१॥

[अ]र्थ – जिसके स्मरण मात्र से (मनुष्य) (जन्म मरण) रूपी संसार के बंधन से छूट जाता है उस प्रकाशवान् व्यापक विष्णु के अर्थ नमस्कार है ॥॥१॥॥

॥ध॥ ॥ध॥ ॥ध॥ ॥ध॥+॥

سری گنیشائے نمہ

یہ ترجمہ سمیت

وِشنُو سہسر نام

لکھتے ہیں

اشلوک

یسیہ سمرن ماترینا جنم سنسار بندہ نات * بمچیتے نمس تسمئی بشنوے پربھ بشنوے ۞ ۱ ۞ (ترجمہ)

جس کے سمرن ماتر سے (منشیہ) (جنم مرن) روپی سنسار کے بندھن سے چھوٹ جاتا ہے اوس پرکاشوان بیاپک وِشنُو کے ارتھہ۔ نمسکار ہے + ۱ +

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

नमः समस्त भूतानामा-
दि भूताय भूभृते । अ-
नेक रूप रूपाय विष्णवे
प्रभविष्णवे ॥२॥
अर्थ — सब जीवों से पहले हो
ने वाले अपनी शक्ती से पृथ्वी को
धारण करने वाले सर्व रूप व्या
पक प्रकाशवान् विष्णु के अ-
र्थ नमस्कार है ॥२॥

वैशंपायनउवाच । श्रु
त्वा धर्माणय शेषेण पाव
नानिचसर्वशः । युधिष्ठि
रशान्तनवं पुनरेवाभ्य-
भाषत ॥३॥
अर्थ — वैशंपायनजी बोले ।
सब प्रकार से पवित्र सब धर्मों
को सुनकर राजा युधिष्टर भीष्म
पितामहजी को फिर बोले ॥३॥
॥छ॥ ॥छ॥ ॥छ॥ ॥छ॥

نمہ سمست بھوتانا مادبھوتائے
بھوبھرتے :: انیک روپ روپائے
بشنوے پربھ بشنوے :: ॥ ۲ ॥
ترجمہ۔ سب جیووں سے پہلے ہونیوالے
اپنی شکتِ سے پرتھوی کو دھارن کرنیوالے
سرب روپ بیاپک پرکاشواں بشنو
کے ارتھہ نمسکار ہے۔

॥ ۲ ॥ ویشم پاینو باچہ اشرتوا
دھرمان شیکھینا پاونانی چہ
سرب شہ :: یدہشتر شانت
نوم پنیر لوابھہ بہاشتا ॥ ۳ ॥
ترجمہ۔ ویشم پاین جی بولے سب پرکار
سے پوتر سب دھرموں کو سنکر راجا
یدہشتر بھیشم پتامہہ جی کو پھر بولے
॥ ۳ ॥

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

युधिष्ठिर उवाच । किमे
कं दैवतं लोके किंवा -
प्येकं परायणम् । स्तु
वन्तः कंक मर्चन्तः प्रापु-
युर्मानवाः शुभम् ॥४॥

अर्थ – राजा युधिष्ठिर ने कहा
कि लोक में कौनसा (वह) एक
देवता है और कौन वह एक है
जिसका मन और बुद्धी से परे स्था
न है और मनुष्य किस किसका अ-
र्चन और स्तुति करके प्राप्त हुए ॥४॥

कोधर्मः सर्व धर्माणां भ-
वतः परमोमतः । किंज
पन्मुच्यते जन्तुर्जन्म सं-
सार बंधनात् ॥५॥

अर्थ – सब धर्मों के बीच आपको
कौनसा धर्म प्रिय है और (यह) जीवा
त्मा क्या जपता हुआ जन्म मरण रूपी सं
सार के बंधन से छूट जाता है ॥५॥

یُدھِشٹر وباچا ۔ کِمیکم دیوتم لوکے
کِم واپیّکم پرایَنم ۔ استونتہ کنک
مَرچنتہ پراپنیرُ مانواہ شُبھم ॥ ۴ ॥

ترجمہ راجا یُدھِشٹر نے کہا ۔ لوک میں کونسا
(وہ) ایک دیوتا ہے اور کون وہ ایک ہے
جسکا من اور بُدّھی سے پرے استھان
ہے اور منش کس کس کا ارچن اور استتی
کر کے پراپت ہوئے ॥ ۴ ॥

کو دَھرمہ سرب دَھرمانام بھوَتہ
پرمو متہہ ۔ کِم جپن مُچیّتے جنتُر
جنم سنسار بندہ نات ॥ ۵ ॥

ترجمہ ۔ سب دھرموں کے بیچ آپ کو کونسا
دھرم پریہ ہے اور (یہہ) جیو آتما کیا جپتا
ہوا جنم مرن روپی سنسار کے بندھن
سے چھوٹ جاتا ہے ॥ ۵ ॥

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

श्रीभीष्मउवाच । जगत्प्रभुं
देवदेवमनन्तंपुरुषोत्तम
म् । स्तुवन्नामसहस्रेणपु-
रुषःसततोत्थितः ॥६॥

अर्थ — श्रीभीष्मपितामह बोले । प्रा
तःकाल उठकर पुरुष संसार के स्वामी
देवताओं के देवता अनंत पुरुषोत्तम
की सहस्रनाम से स्तुति करता हुआ स
ब दुःखों को उल्लंघन कर जाता है ॥६॥

तमेव चार्चयन्नित्यं भक्त्या
पुरुषमव्ययम् । ध्यायन्स्तु
वन्नमस्यंश्च यजमानस्तमे
व च ॥७॥

अर्थ — भक्ती से उसी अविनाशी पु
रुष का नित्य अर्चन करता हुआ -
ध्यान स्तुति नमस्कार और उसी का
पूजन करता हुआ मनुष्य सब
दुःखों से पार हो जाता है ॥७॥

॥छ॥ ॥छ॥ ॥छ॥ ॥छ॥

بھیشمو باچا :: جگت پربھم دیو دیوے
منتم پرشوتمّم :: استون نام سہسرینا
پرشھ ستت تو تتھہ :: ٦ ::

بھیشم پتامھہ بولے - پرات کال اُٹھہ
کر پرش سنسار کے سوامی دیوتاون کے
دیوتا اننت پرشوتمّ کی سہسر نام سے استتی کرتا
ہوا سب دُکھوں کو اولنگھن کرجاتا ہی ॥ ٦ ॥

تمیو چارچین نتیم بھکتیا پرش
موّیم :: دھیایے نستون نمسیم
چے یجمانستو میو چا :: ٧ ::

ترجمہ - بھکتی سے اُسی ابناشی پرش
کا نتیہ ارچن کرتا ہوا دھیان استتی نمسکار
اور اُسی کا پوجن کرتا ہوا منشیہ سب دُکھوں
سے پار ہو جاتا ہے۔

॥ ٧ ॥

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

अनादि निधनं विष्णुं सर्व लोक महेश्वरम् । लोकाध्यक्षं स्तुवन्नित्यं सर्व दुःखाति गोभवेत् ॥८॥

अर्थ – अनादि और नाश से रहित संपूर्ण लोकों का ईश्वर और स्वामी व्यापक विष्णु की स्तुति करता हुआ मनुष्य सब दुःखों से पार हो जाता है ॥८॥

ब्रह्मण्यं सर्व धर्मज्ञं लोकानां कीर्त्ति वर्धनम् । लोकनाथं महद्भूतं सर्व भूत भवोद्भवम् ॥९॥

अर्थ - दयालू और सब धर्मों को जानने वाला लोकों की कीर्त्ति बढ़ाने वाला लोकों का स्वामी सबसे बड़ा सब जीवों की उत्पत्ति के कारण विष्णु की स्तुति करता हुआ मनुष्य सब दुःखों से पार होजाता है ॥९॥

انا دِ ندِ ہنم وِشنُم سرب لوک
مہیشورم لوکا دِہکشم اِستُون
نِتّیم سرب دُکھّات گو بھویت ॥۸॥

ترجمہ۔ انادی اور ناش سے رہت سمپورن لوکوں کا ایشور اور سوامی بیاپک وِشنُو کی اِستتی کرتا ہوا منشیہ سب دُکھوں کے پار ہو جاتا ہے ॥ ۸ ॥

برہمنیم سب دھرمگیم لوکانام کیرتِ
بردھنم لوک ناتھم مہد بھوتم
سرب بھوت بھوودبھوم ॥۹॥

ترجمہ۔ دیالو اور سب دھرموں کو جاننے والا لوکوں کی کیرتی بڑھانے والا لوکوں کا سوامی سب سے بڑا سب جیووں کی اُتپتّی کے کارن وِشنو کی اِستتی کرتا ہوا منشیہ سب دکھوں سے پار ہو جاتا ہے ॥ ۹ ॥

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

एषमे सर्व धर्माणां धर्मोऽ
धिक तमोमतः । यद्भक्त्या
पुण्डरीकाक्षं स्तवैरर्चेन्नरः
सदा ॥१०॥

अर्थ – यह धर्म मुझको सब धर्मों में अधिक प्रिय है जोकि भक्ती से कमल नयन भगवान् की स्तुति और पूजन मनुष्य सदा करै ॥१०॥

परमंयो महत्तेजः परमं-
यो महत्तपः । परमंयोम
हद्ब्रह्म परमंयः परायण-
म् ॥११॥

अर्थ – जो सूर्य्यादिकों में परम तेज ऋषि मुनियों में परम् तप और सब पदार्थों में परम ब्रह्म और मन वुद्ध्यादिकों से परे परम रूप है ॥११॥

॥७॥ ॥७॥ ॥७॥ ॥७॥

ایشمے سرب دہرمانام دھرمو
دہک تمو متہ یدبھکتیا-
پُنڈری کاکشم اِستوئی ررچے
نرہ سدا ۞ ۱۰ ۞

ترجمہ- یہہ دھرم مجھکو سب دھرموں میں اَدِہک پریہ ہے جوکہ بھکتی سے کمل نین بھگوان کی اِستُتی اور پُوجن مُنشیہ سدان کرے ۱۱۰۱۱

پرمَم یو مہتیجہ پرمَم یو مہتپہ پرمَم یو مہد
برمھا پرمَم یہہ پرایَنَم ۞ ۱۱ ۞

ترجمہ- جو سُوریادکوں میں پرم تیج رشی مُنیوں میں پرم تپ اور سب پدارتھوں میں پرم برمھ اور من بُدھیادِکوں سے پرے پرم روپ ہے-

۱۱ ۱۱ ۱۱ ۱۱ ۱۱ ۱۱

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

पवित्राणां पवित्रंयो मंगलानांच मंगलम् । दैवतं देवतानांच भूतानां योऽव्ययः पिता ॥१२॥

अर्थ – और जो पवित्रों में पवित्र और सब मंगलों में मंगल और सब देवताओं के बीच देवता सब जीवों का अविनाशी रूप रक्षा करने वाला परमेश्वर है ॥१२॥

یوترانام پوترم یومنگلانام چہ منگلم
دیئیوتم دیوتانام چہ بہوتا نام
یووییہ پتا ۔ ۱۲ ۔

ترجمہ ۔ اور جو پوتروں میں پوتر اور سب منگلوں میں منگل اور سب دیوتاؤں کے بیچ دیوتا سب جیوؤں کا ابناشی ایک روپ رکشا کرنے والا پرمیشور ہے ॥ ۱۲ ॥

यतः सर्वाणि भूतानि भवन्त्यादि युगागमे । यस्मिंश्च प्रलयं यान्ति पुनरेव युगक्षये ॥१३॥

अर्थ – उसी से सृष्टि की आदि में सब जीव होते हैं फिर सृष्टि के नाश होने पर उसी में लीन हो जाते हैं ॥१३॥

॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥

یتہ سربان بہوتانی بہونتیا
دی یوگاگمے اسمنشچہ پرلیم
یانتی پنیر یوگکشئے ۔ ۱۳ ۔

اُسی سے سرشٹ کی آد میں سب جیو ہوتے ہیں پھر سرشٹ کے ناش ہونے پر اُسی میں لین ہو جاتے ہیں ۔

॥ ۱۳ ॥ ॥ ۱۳ ॥

सत्यलोक प्रधानस्य ज-
गन्नाथस्य भूपतेः । वि
ष्णोर्नाम सहस्रम्मे शृणु-
पाप भयापहम् ॥१४॥

अर्थ – हे राजन् । उस जगतके
नाथ लोक प्रधान परमेश्वर वि
ष्णु के सहस्र नाम पाप और भ
य के नाश करने वाले मुझ से-
सुनो ॥१४॥

यानि नामानि गौणानि-
विख्यातानि महात्मनः ।
ऋषिभिः परिगीतानि ता
नि वक्ष्यामि भूपते ॥१५॥

अर्थ – हे राजन् । ऋषियों
ने भगवान् के जौनसे गुण ना
म विख्यात किये हैं उनको क
हूंगा ॥१५॥

॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥

سَتیہ لوک پردہانسے جگناتھسیہ
بھوپتے وِشنور نام سہسرم
مے شُرنُ پاپ بھیاپہم ॥ ۱۴ ॥

ترجمہ۔ ہے راجن۔ اوس جگت کے
ناتھہ لوک پردہان پرمیشور وِشنُو کے
سہسر نام پاپ اور بھیئے کے ناش کرنے
والے مجھ سے سنو ॥ ۱۴ ॥

یان نامانِ گورانی بِکھیاتانی مہاتمنہ
رِشبھِہ پرگیتانی تانِ وکشیام
بھوپتے ॥ ۱۵ ॥

ترجمہ۔ ہے راجن۔ رشیون نے بھگوان
کے جون سے گن نام بکھیات کیے ہیں
ان کو کہونگا۔

॥ ۱۵ ॥ ۱۵ ॥ ۱۵ ॥

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

ऋषिर्नाम्नां सहस्रस्य वेद-
व्यासो महामुनिः । छन्दो
ऽनुष्टुप् तथा देवो भगवान्
देवकी सुतः ॥१६॥

अर्थ — इन सहस्र नामों का वेद व्यास ऋषि है और अनुष्टुप् छंद है और देवकी पुत्र भगवान देवता है ॥१६॥ ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥

ॐ विष्णु जिष्णु महाविष्णु
प्रभविष्णुं महेश्वरं । अने
क रूप दैत्यान्तं नमामि पु-
रुषोत्तमं ॥१७॥

अर्थ — अनेक रूप धारण करके दैत्यों को मारने वाले पुरुषोत्तमं विष्णु महाविष्णु प्रकाशवान् विष्णु महेश्वर को प्रणामं करता हूं ॥ ॥१७॥ ॥

॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥

رِشِر نام نام سہسر سیّے ویدوّیا
سو مہا منِہ چھند و انشٹپ تتھا
دیو و بھگوان دیوکی سُتہ ۞ ۱۶ ۞

ترجمہ۔ اِن سہسر ناموں کا ویدوّیاس رِشی ہے اور انشٹپ چھند ہے اور دیوکی پُتر بھگوان دیوتا ہے ॥ ۱۶ ॥

وِشنُم جشنُم مہا وِشنُم پربھہ
وِشنُم مہیشورم انیک روپ دیتیا
نتم نام پرشوتمّ ۞ ۱۷ ۞

ترجمہ۔ انیک روپ دہارن کرکے دیتیوں کو مارنے والے پرشوتمّ وِشنو مہا وشنو پرکاشوان وِشنو مہیشور کو پرنام کرتا ہوں ॥ ۱۷ ॥

॥ ۱۷ ॥ ۱۷ ॥

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

अस्य श्री विष्णोर्दिव्यसह
स्र नाम स्तोत्र महामन्त्रस्य
श्रीभगवान् वेदव्यासऋ-
षिरनुष्टुप्छन्दः श्रीकृष्ण
परमात्मा देवता अमृतांशु
द्भवोभानु रितिबीजम् ॥

अर्थ — इस उत्तम महा मंत्र वि
ष्णु सहस्रनाम का भगवान् वेदव्या
स ऋषि और अनुष्टुप्छन्द और
श्रीकृष्ण परमात्मा देवता है अमृ-
त रूपी किरणों से उत्पन्न हुआ-
सूर्य्य यह इसमें बीज है ॥

اَسیّے شری وشنوردِبیّہ
سہسر نام استوتر مہا منتر
سیے بھگوان ویدوّیاس
رشی رنشٹپ چھندہ شری
کرشن پرماتما دیوتا امرتام
شدبھو وبھانو رتی بیجم ॥

ترجمہ - اس اُوتّم مہا منتر وشنو سہسر نام
کا بھگوان ویدوّیاس رشی اور انشٹپ
چھند اور شری کرشن - پرماتما دیوتا ہے
امرت روپی کرنوں سے اُتپن ہوا سوریہ
اس میں بیج ہے ॥

देवकी नन्दनः स्रष्टेति श-
क्तिः त्रिसामा सामगः सामे-
ति हृदयम् शंखभृन्नन्द
की चक्रीति कीलकम् शा
र्ङ्गधन्वा गदाधर इत्यस्त्र-
म् रथांगपाणि रक्षोभ्य इ-
ति कवचम् ॥२॥

अर्थ - देवकी के पुत्र संसार के उ
त्पन्न करने वाले यही शक्ती अर्था
त् सामर्थ्य है कर्म उपासना ज्ञान को
सामवेद की रीति से जानने वाले औ
र सामवेद के पारगंता श्रीकृष्ण सा-
मवेद रूप हैं यह हृदय है शंख औ
र खड्ग चक्र के धारण करने वाले य
ही दुष्टों को दंड और रोक देने । अर्थ की
लक है शारंग नाम धनुष और गदा धा
रण करने वाले यह अस्त्र है रथ का
पहिया हाथ में धारण किया भीष्म पि
तामह वो राक्षसों के अर्थ यह कवच
अर्थात् वख्तर है ॥

دیوکی نندنہ سرشٹیت شکتی ترِساما سامگھ
سامیتِ ہِردیم شنگھ بھرِن نند کی
چکری اِتی کیلکم شارنگ دہنوا گدادہر
اِتیسترم رتھانگ پانی رکشوبھیا اِتی کوچم ۲
ترجمہ۔ دیوکی پُتر سنسار کے اوتپن کرنیوالے۔
یہی شکتی۔ ارتھات سامرتھ ہے کرم اوپاسنا
گیان کو سام وید کی ریتی سے جاننے والے.
اور سام وید کے پارگنتا شری کرشن سام وید
روپ ہیں۔ یہ ہردے ہے شنگھ اور کھڑگ
چکر کے دھارن کرنیوالے یہی دشٹوں کو ڈنڈ
اور روک دینے کے ارتھ کیلک ہے شارنگ
نام دہنش اور گدا دھارن کرنیوالے۔ یہ استر ہے
رتھ کا پہیا ہاتھ میں دھارن کیا بھیشم پتا مہ وہ
راکشوں کے ارتھ۔ یہ کوچ ارتھات بکھتر[1] ہے

[1] یہ لفظ فارسی یعنی بخترلوہے کا ہوتا ہے
جو ہاتھ میں پہنتے ہیں کہ وہ کہنی تک آجاتا ہے ۱۲

उद्भवः क्षोभणोदेव इति परमोमन्त्र श्रीकृष्णप्री-त्यर्थे सहस्रनाम स्तोत्रः जपे विनियोगः ॥ अथ करन्यासः ॥

अर्थ — उत्पत्ति और विनाश करते हैं यह परम मंत्र है श्रीकृष्ण की प्रीति के अर्थ सहस्रनाम स्तोत्र के जप में विनियोग है यह पढ़कर जल छोड़ देना चाहिये । अब हाथों को पवित्र करने के अर्थ करन्यास विधि परमेश्वर के गुण कर्मो का ध्यान करके अंगूठा आदिकों को छूना चाहिये । जैसा कि आगे है ॥

اُدبھوہ کشوبھنو دیواتی پرمومنتر شری کرشن پریتر تھے سہسرنام استوتر جپے وِنیوگھہ ؞

انتھہ کرنیاسہ ؞

ترجمہ۔ اوتپتی اور بناش کرتے ہیں۔ یہ پرم منتر ہے۔ شری کرشن کی پریتی کے ارتھ سہسر نام اِستوتر کے جپ مین وِنیوگ ہے۔ یہ پڑھ کر جل چھوڑ دینا چاہیئے۔ اب ہاتھوں کو۔ پوتر کرنے کے ارتھ کرنیاس بدھی پرمیشور کے گُن کرموں کا دھیان کر کے۔ انگوٹھا اِدکوں کو چُھونا چاہیئے۔ جیسا کہ آگے ہے۔

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

ॐ उद्भवाय अंगुष्ठाभ्यांनमः
ॐ क्षोभणाय तर्जनीभ्यांनमः
ॐ देवतायमध्यमाभ्यांनमः
ॐ ऊद्भवाय अनामिकाभ्यां
नमः। ॐ क्षोभणाय कनिष्ठाभ्यांनमः। ॐ देवायकरतल करपृष्ठाभ्यां नमः।
इति करन्यासः॥

अर्थ – उत्पत्ति करनेवाले के अर्थ नमस्कार है ऐसा ध्यान करके दोनों हाथों के अंगूठों को छूना चाहिये। क्षोभणाय। ऐसा कहकर तर्जनियों को छुवे। देवाय। ऐसा कह बीच की उंगलियों को छुवे। ऊद्भवाय। ऐसा कह छोटी उंगली के पास की उंगलियां छुवे। क्षोभणाय। कहकर छोटी उंगलियों को छुवे। देवाय। प्रकाशरूपाय। ऐसा ध्यान कर दोनों हाथों की पीठ मिला परमेश्वर को प्रणाम करै। इति करन्यास॥

اوم اُدبہوائے انگشٹھا بھیام نمہ ۔ اوم کشوبہنائے ترجنی بہیام نمہ ۔ اوم دیوائے مدّہ مابہیام نمہ ۔ اوم ادبہوائے انامِکابہیام نمہ ۔ اوم کشوبہنائے کنشٹہام بہیام نمہ ۔ اوم دیوائے کرتل کرپرشٹہابہیام نمہ ۔ اِتی کرنیاسہ

ترجمہ۔ اوتپتی کرنیوالے کے ارتھ نمسکار ہے ایسا دہیان کرکے دونوں ہاتھوں کے انگوٹھونکو چھونا چاہئے کشوبہنائے۔ ایساکہکر ترجنیوں کو چھوے دیوائے۔ ایساکہہ کر بیچ کی انگلیوں کو چھوے اُدبہوائے ایساکہکر چھوٹی انگلی کے پاس کی انگلیوں کو چھوے۔ کشوبہنائے کہکر چھوٹی انگلیونکو چھوئے دیوائے پرکاش روپائے ایسا دہیان کر دونوں ہاتھوں کی پیٹھ ملا پرمیشور کو پرنام کرے۔ اِتی کرنیاسہ

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

अथ हृदयादिखड़गन्यासः
सुव्रतःसुमुखःसूक्ष्मःज्ञा
नायहृदयायनमः सहस्र
मूर्द्धा विश्वात्मा ऐश्वर्याय
सिरसेस्वाहा सहस्रार्चिः
सप्तजिह्वःशक्तैथ शिखायै
वषट् त्रिसामासामगःसाम
वलायःकवचाय हुं ॥

अर्थ–इसके उपरांत हृदय को आदिले छः अंगों का स्पर्श है। सुन्दर है व्रत संकल्प जिनका। श्रेष्ठ है मुख जिसका जो सूक्ष्मज्ञान रूप परमेश्वर है। उसके अर्थ नमस्कार है। ऐसा कह हृदय के हाथ लगावे। सहस्र मस्तक वाला संसार का आत्मा ऐश्वर्य रूप भगवान ऐसा ध्यान कर शिर के हाथ लगावे। श्रेष्ठ पदार्थों की आहुति भोगने वाला स्वाहा रूप। सहस्रों शिखा जिस अग्नि रूप परमेश्वर के हैं और सात जिह्वा वाला सामर्थ रूप भगवान है। ऐसे ध्यान से चोटी को छुवे। वषट् हवी भोगने वाला कहकर कांड त्रय सहित सामवेद के गान करने वाले पारंगता वल रूप का ध्यान कर दोनों भुजमूलों को छुवे। हुं दुष्टों के नाश के अर्थ ॥

اتھہ ہردیا دکھڑنگ نیاسہ ؛ سبرتہ سمکھہ
سوکشمہ گیانائے ہردیائے نمہ ؛ سہستر
مورُوہا وشواتما ایشوریائے سرسے
سواہا ؛ سہسرارچھہ سپت جہیا شکتی
شکھائی وکھٹ ترسا ماسامگھہ سام بلایہ
کوچائے ہُم ؛

ترجمہ۔ اسکے اوپرانت ہردے کو آدلے چھہ انگونکا اسپرش ہے۔ سندرہے برت سنکلپ جسکا شریشٹھہ ہے مکھہ جسکا۔ جو سوکشم گیان روپ پرمیشور ہے اسکے ارتھہ نمسکار ہے ایسا کہکر ہردے کے ہاتھہ لگادے سہسر مستک والا سنسار کا آتما ایشوریہ روپ بھگوان ایسا دہیان کرسر کے ہاتھہ لگادے۔ شریشٹھہ پدارتھونکی آہوتی بھوگنے والا سواہا روپ سہسروں شکھا جس اگنی روپ پرمیشور کے ہیں اور سات جہیا والا سامرتھہ روپ بھگوان ہے۔ ایسے دہیان سے چوٹی کو چھوے۔ وکھٹ ہوی بھوگنے والا کہکر کانڈتریہ سہت سام وید کے گان کرنے والے پارگنتا بل روپ کا دھیان کر دونوں بھج مولوں کو چھوے ہُم دشٹوں کے ناش کے ارتھہ۔

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

रथांगपाणि रक्षोभ्यः तेजसे
नेत्राभ्यां वौषट् शारंगधन्वा
गदाधरः वीर्याय अस्त्राय
फट् ऋतुःसुदर्शनःका-
लः भूर्भवःस्वरोम् दिग्बंधः
॥ इति हृदयादिन्यासः ॥

अर्थ — रथका पहिया हाथ में-
राक्षसों के मारने के अर्थ हवि भोग
ने वाले परमेश्वर का ध्यान करसे
से तेज रूप भगवान का ध्यानक
र आँखों को छुवे । शारंगनाम ध-
नुष और गदा को धारण करने वा-
ले प्राक्रम रूप अस्त्र रूपका ध्यान
कर दोनों हाथों से ताल शब्द करै
कहीं ऋतु रूप देखने में अच्छे ल
गें एक रस पृथ्वी अंतरिक्ष और स्व
र्ग में प्रणव रूप हो व्यापक यह दि-
शाओं का बंधन है । ऐसे हृदय को आ
दिले न्यास करै । अर्थात् अंगों को छुवे

رتھانگ پانی رکشوبھیہ تیج سے نیترا
بھیام ووکھٹ :: شارنگ دہنوا گدادہر
بیریائے استرائے پھٹ :: رتہ سُد
رشنہ کالہ بھور بہوہ سُرومِ دگ بندہ
اِتی ہردیا دنیاسہ ::

ترجمہ۔ رتھہ کا پہیّا ہاتھ میں راکشوں کے مارنے
کے ارتھہ ہوی بھوگنے والے پرمیشور کا دہیان
کراسے تیج روپ بھگوان کا دھیان کر آنکھوں
کو چھووے۔ شارنگ نام دُہنش اور گدا کو
دہارن کرنے والے پراکرم روپ استر روپ
کا دہیان کر دونوں ہاتھوں سے تال شبد
کرے چھُوں رتُ روپ دیکھنے میں اچھے لگیں ایک
رس پرتھوی انت رکش اور سُرگ میں پرنو
روپ ہو بیاپک یہ دشاؤں کا بندھن ہے۔
اسے ہردے کو آدے نیاس کرے۔ اِرتہات
انگوں کو چھووے۔

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

ॐ शांताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम् लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं वंदे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम् ॥१॥

अर्थ – शान्त मूर्ति शेषनाग पर सोने वाले कमल नाभ देवताओं के स्वामी संसार के आधार आकाश के समान नील रंग वर्ण ऋतु के सा जल बादल के सा वर्ण श्रेष्ठ अंग लक्ष्मी के प्यारे कंवल की बराबर हैं नेत्र-जिसके योगियों से ध्यान प्राप्त-ऐसे संसार के भय हरने वाले संपूर्ण लोकों के एक नाथ विष्णु भगवान को मैं वंदना करता हूं ॥१॥

यह ध्यान भक्त करै ॥

॥ ध ॥ ध ॥ ध ॥ ध ॥

شانتا کارم بھجگ شئیم پدم نابھم سُرشم بشوادھارم گگن سدرشم : میگھ ورنم شُبھانگم لکشمی کانتم کمل نئیم یوگ بھر دھیان گمیّم : بندے وشنم بھو بھئے ہرم سرب لوکیک ناتھم : ۱ :

ترجمہ ۔ شانت مورتی شیش ناگ پر سونے والے کمل نابھ دیوتاؤں کے سوامی سنسار کے آدھار اکاش کے سماں رنگ برن رت کے ساجل بادل کے سا برن سریشٹھ انگ لکشمی کے پیارے کنول کے برابر ہیں نیتر جس کے یوگیوں سے دھیان پراپت۔ ایسے سنسار کے بھئے ہرنے والے سمپورن لوکوں کے ایک ناتھ وشنو بھگوان کو میں بندنا کرتا ہوں۔ یہ دھیان بھکت کرے۔

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

ॐ विश्वं विष्णुर्वषट्कारो भूतभव्यभवत्प्रभुः। भूतकृत् भूतभृद्भावो भूतात्मा भूतभावनः॥१॥

अर्थ—संसार रूप। व्यापक। देवताओं से दी हुई हवि के भोजन करने वाले। सब जीवों के प्रकाश के स्वामी सब की उत्पत्ति करने वाले। सब जीवों का भरण पोषण-करने वाले। भक्तों के प्यारे। सब जीवों के आत्मा और समस्त जीवों के प्यारे। भगवान को नमस्कार है ॥१॥

पूतात्मा परमात्मा च मुक्तानां परमा गतिः। अव्ययः पुरुषः साक्षी क्षेत्रज्ञोऽक्षर एव च ॥२॥

अर्थ—पवित्र आत्मा। और योगिजनों से ध्यान में जाना जाय। मुक्त पुरुषों के परमगति के दाता स्वर्ग मृत्यु पाताल भक्त अभक्त वाच कुवाच में व्यापक अविनाशी। सब में शयन रूप सब कर्मों का साक्षी शरीर भेद को जानने वाला जिसका कभी नाशन होय। ऐसे भगवान को नमस्कार है॥

اوم بشوم وِشنر بکھٹ کارو

بھوت بھوّ بھوت پربھ ؞

بھوت کرت بھوت بھرد بھاوو

بھوتاتما بھوت بھاونہ ؞ ا ؞

ترجمہ سنسار روپ-بیاپک-دیوتاون سے دی ہوئی ہوی کے بھوجن کرنیوالے سب جیونکے پرکاش کے سوامی سب کی اوتپتی کرنیوالے سب جیونکا بھرن پوشن-کرنیوالے بھگتوں کے پیارے سب جیوون کے آتما اور سمست جیونکے پیارے بھگوان کو نمسکار ہے ؞ ا ؞

پوتاتما پرماتما چہ مکتا نام پرما گتھہ ؞

اویہ پرشہ ساکشی کشیتر گیو کشیر ایوچہ ؞

ترجمہ-پوترآتما-اور یوگی جنوں سے دہیان میں جانا جاے-مکت پرشون کے پرم گتی کے داتا سُرگ مرتیو پاتال بھکت ابھکت-باچ کُباچ مین بیاپک ابناشی سب مین شین روپ سب کرموں کا ساکشی شریر بھید کو جاننے والا جس کا کبھی ناش نہ ہوا یسے بھگوان کو نمسکار ہے ؞ ا ؞

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

योगोयोगविदांनेताप्रधान
पुरुषेश्वरः। नारसिंहवपुः
श्रीमान्केशवःपुरुषोत्तमः।३
अर्थ – चित्तकीवृत्तिकेरोकनेवाले।यो
गियोंकेरक्षक प्रधानपुरुषोंकेईश्वर।
नृसिंहजीकाशरीरधारणकरनेवाले-
शोभायमान।जलशायी।सबपुरुषोंमें
उत्तमरूप।भगवानकोनमस्कारहै।।३।।

सर्वःशर्वःशिवःस्थाणुर्भूता
दिर्निधिरव्ययः।सम्भवो
भावनोभर्ताप्रभवःप्रभुरी-
श्वरः॥४॥

अर्थ – सर्वरूप।और दुष्टोंके ना-
शकेसर्वरूप।शिवस्थिररूप।स
वजीवोंकेआदिईश्वर।समुद्ररूप।
अविनाशी।उत्पत्तीकरनेवाले।प्यारे।
पालनकरनेवाले। जिससेसबउत्प
न्नहों स्वामीईश्वरकेअर्थनमस्कार
है॥४॥ ॥५॥ ॥५॥ ॥५॥ ॥५

یوگو یوگ ودام نیتا پردھان
پرشیشورہ ؛ نارسنگھ وپہ
شری مان کیشوہ پرشوتمہ ؛ ۳ ؛

ترجمہ۔ چت کی برتی کے روکنے والے۔ یوگیوں کے
رکشک پردھان پرشوں کے ایشور۔ نرسنگھ کا سا شریر
دھارن کرنے والے شوبھایمان۔ جل شائی۔ سب
پرشوں میں اُوتم روپ۔ بھگوان کو نمسکار ہے ؛ ۳ ؛

سربہ شربہ شوستھا نربھوتا
درنہ دہروَیہ ؛ سم بہووبہاو
نوبھرتا پربھوہ پربھ ریشورہ ؛ ۴ ؛

ترجمہ۔ سرب روپ۔ اور دشٹوں کے ناش
کے شرب روپ۔ شوستھر روپ۔ سب جیووں
کے آدِ ایشور۔ سمدر روپ ابناشی۔ اوتپتی کرنے
والے۔ پیارے۔ پالن کرنے والے جس سے
سب اوتپن ہوں سوامی ایشور کے ارتھ
نمسکار ہے ؛ ۴ ؛ ۴ ؛ ۴ ؛

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

स्वयम्भूः शम्भुरादित्त्यः पुष्क
राक्षो महास्वनः। अनादि-
निधनो धाता विधाता धा-
तरुत्तमः॥५॥

अर्थ-अपने आप होनेवाले। महा
देवरूप। सूर्य्यरूप। कमलनयन। बड़े
भारी। शुद्धरूप। आदि अंत से रहित।
सब जगत के धारण करनेवाले ब्रह्मरू
प। ब्रह्मा से भी उत्तमरूप। भगवान को
नमस्कार है॥५॥

अप्रमेयो हृषीकेशः पद्मना-
भोऽमरप्रभुः। विश्वकर्मा म-
नस्त्वष्टा स्थविष्ठः स्थविरो ध्रु
वः॥६॥

अर्थ-परमाण रहित इन्द्रियों के स्वा
मी। कमलनाभ देवताओं के स्वामी इन्द्र
रूप विश्वकर्मा शिल्पशास्त्र के प्रकाश-
क स्वायंभूव आदि मनुरूप रूपें हात्व-
ष्टा। देवता स्थिर वृद्ध और ध्रुवरूप
भगवान को नमस्कार है॥

سَوِیَمبھُو شنبھُورادِتّیہ پُشکرا
کشو مہاسوَنہ ؛ انادِ ندِہنو دھاتا
بِدِہاتا دھات رُتّمہ ؛ ۵ ؛

ترجمہ۔ اپنے آپ ہونیوالا۔ مہادیو روپ۔ سُوریہ روپ
کمل نین۔ بڑے بھاری۔ شُدّھ روپ۔ آدِ انت سے
رہت۔ سب جگت کے دہارن کرنے والے۔ برھم
روپ۔ برمہا سے بھی اُتّم روپ بھگوان کو نمسکار
ہے ؛ ۵ ؛ ۵ ؛ ۵ ؛ ۵ ؛

اَپرمے یو ہرشی کیشہ پدم نابھو
مرپربھُو ؛ بشوکرما منستشٹھا
تھو یشٹھاس تھورو دُہروہ ؛ ۶ ؛

ترجمہ۔ پرمان رہت اِندریوں کے سوامی۔ کمل
نابھہ۔ دیوتاؤں کے سوامی۔ اِندر روپ۔
بشوکرما۔ شلپ شاشتر کے پرکاشک سوایمبھو
آدِ منو روپ۔ روپ بہاترشٹھا۔ دیوتا استھر
بِردّھ۔ اور دُہرو روپ۔ بھگوان کو نمسکار ہے
؛ ۶ ؛ ۶ ؛ ۶ ؛ ۶ ؛

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

अग्राह्यः शाश्वतः कृष्णो लो
हिताक्षः प्रतर्दनः । प्रभुत-
स्त्रिककुब्धाम पवित्रं मङ्ग
लं परम् ॥ ७ ॥

اگراہیہ شاشوتہ کرشنو لوہتا کشھہ
پرتردنہ ؛ پربھوتستری ککبدہاما
پوترم منگلم پرم ۞ ۷ ۞

अर्थ - जोसन बुद्धि से परे । सदा रहनेवाला ‧ खैंचनेवाला ‧ ईषत रक्त हैं नेत्र जिसके । प्रतर्दन राजा रूप । जाग्रत ‧ स्वप्न ‧ सुषुप्ति ‧ तीनों में रहनेवाला । शुद्ध । मंगल रूप सब से परे है ऐसे भगवान को नमस्कार है ॥ ७ ॥

ترجمہ - جو سن بدھی سے پرے - سدا رہنے والا - کھینچنے والا - ایشت رکت ہیں نیتر جسکے - پرترون راجا روپ - جاگرت - سپن - سکھپت - تینوں میں رہنے والا - شدہ - منگل روپ سب سے پرے ہے - ایسے بھگوان کو نمسکار ہے ۞ ۷ ۞

ईशानः प्राणदः प्राणो ज्येष्ठः
श्रेष्ठः प्रजापतिः । हिरण्यग-
र्भो भूगर्भो माधवो मधुसूदनः ८

ایشانہ پرانده پرانو جیشٹھہ
سریشٹھہ پرجاپتہ ؛ ہرنیہ گربھو بھو
گربھو مادھو و مدھ سودنہ ۞ ۸ ۞

अर्थ - सबका स्वामी । प्राणों का देनेवाला प्राणरूप ‧ सबसे बड़ा ‧ अच्छा संसार का स्वामी ‧ सूर्यादि स्वगोल है पेट में जिसके । पृथ्वी को भी पेट में धारन करनेवाला ‧ माया को आकाश में चलानेवाला । मधु कैटभ को मारनेवाला भगवान रूप ‧ ऐसे भगवान को प्रणाम है ॥ ८ ॥ ७९ ॥

ترجمہ - سب کا سوامی - پرانوں کا دینے والا - پران روپ سب سے بڑا - اچھا سنسار کا سوامی - سوریادی سو گول ہے پیٹ میں جس کے - پرتھوی کو بھی پیٹ میں دھارن کرنے والا - مایا کو اکاش میں چلانے والا - مدھ کیٹھ کو مارنے والا - بھگوان روپ - بھگوان کو پرنام ہے ۞ ۸ ۞ ۞ ۸ ۞

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

ईश्वरोविक्रमीधन्वीमेधावी
विक्रमःक्रमः।अनुत्तमोदुरा-
धर्षःकृतज्ञःकृतिरात्मवान् ९

अर्थ –समर्थ·शूरबीर·धनुषधारी·बुद्धिवान·धारणवाला सबको उलंघन कर रहनेवाला·रीतिकेसाथ यथावत् वरतावबाला·सबसे उत्तम·जिससे सब कोई भयमाने। कियेको माननेवाला। जगतकाकरता आत्मज्ञानी निजबोध रूप·परमेश्वरको प्रणाम है ॥९॥

سُریشہ شرنم شرما بشوریتا پرجا

ایشورو بکرمی دہنوی میدہاوی
وکرمہ کرمہ ؛ انُتموُ دُرادہرشہ
کرتگیاہ کرتر اتموان ؛ ۹ ؛

ترجمہ۔ سمرتھ۔ شور بیر۔ دہنش دہاری۔ بُدھ وان۔ دہارن والا۔ سب کو اولنگھن کر رہنے والا۔ ریتی کے ساتھ یتہاوت برتاؤ والا۔ سب سے اُوتّم جس سے سب کوئی بھیے مانے کئے کو ماننے والا۔ جگت کا کرتا۔ اتما گیانی۔ نج بودہ روپ پرمیشور کو پرنام ہے ؛ ۹ ؛

सुरेशःशरणंशर्म्मविश्व
रेताप्रजाभवः।अहःसंवत्स-
रोव्यालःप्रत्ययःसर्व्वदर्शनः
॥१०॥

अर्थ – देवताओंकास्वामी·शरणागत रक्षक·कल्याणरूप·संसारकाबीज·जिससे प्रजाहो·दिनरूप·परमाणुओंसे ले-स्वास·पलात्मकहो·संवत्सररूप·शेषनाग हो पृथ्वीके धारण करनेवाला·ज्ञानरूप। सबको देखनेवाले·ऐसे भगवान को प्रणाम करतेभये ॥१०॥

سُریشہ شرنم شرما بشوریتا پرجا
بہوہ ؛ اہہ سنبت سرو بیالہ
پرتیہ سرب درشنہ ؛ ۱۰ ؛

ترجمہ۔ دیوتاؤں کا سوامی۔ شرناگت۔ رکشک کلیان روپ سنسار کا بیج۔ جس سے پرجا ہو۔ دن روپ پرماؤں سے لے سانس۔ پلاتمک ہو سنبت سر روپ شیس ناگ ہو پرتھوی دہارن کرنے والا گیان روپ سب کو دیکھنے والے بھگوان کو پرنام ہے
؛ ۱۰ ؛ ۱۰ ؛ ۱۰ ؛

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

अजः सर्वेश्वरः सिद्धः सिद्धिः
सर्वादिरच्युतः। वृषाकपिर
मेयात्मा सर्वयोगविनिःसृतः ११

अर्थ – जन्ममरणरहित · सबकास्वामी · सिद्धान्तका जाननेवाला · अष्टसिद्धिरूप · सबसे आदिरूप · विनाशरहित · कामना पूरी करनेवाला · अप्रमाण अनंत · राजयोग · हठयोगादि सबयोग जिससे पैदा हुए हैं ऐसे भगवान को नमस्कार है ॥११॥

वसुर्वसुमनाः सत्यः समात्मा
संमितः समः। अमोघः पुण्डरी
काक्षो वृषकर्मा वृषाकृतिः १२

अर्थ – अष्टवसुरूप · और वसुओं में है मन जिनका · सत्यरूपको समानता से देखनेवाला · जिसके समान दूसरा नहीं · सबएकरूप वहुरूप · कमलनयन · कामनाके पूरण करनेवाला पापों का नाशक · ऐसे भगवान को नमस्कार है ॥१२॥

اَجَھ سربیشوُرہ سِدھَّ سِدھِ سربادِ
رچّوُتھ :: برِکھاکپ رمے یاتماسرب
یوگ وِنھ سِرتھ :: ۱۱ ::

ترجمہ۔ جنم مرن رہت۔ سب کا سوامی۔ سدہانت کا جاننے والا۔ اشٹ سدھی روپ۔ سب سے آدِ روپ بناش رہت۔ کامنا پوری کرنے والا۔ اپرمان۔ اننت۔ راج یوگ۔ ہٹھ یوگادِ سب یوگ جس سے پیدا ہوتے ہیں۔ ایسے بھگوان کو نمسکار ہے :: ۱۱ ::

وسُروسُمناہ ستّیہ سماتماسمّتھ سمہ:
اموگھہ پنڈری کاکشو برکھہ کرما برکھاکرتیھ :: ۱۲ ::

ترجمہ۔ اشٹ وسو روپ۔ اور وسوؤں میں ہے من جس کا۔ ستیہ روپ کو سمانتا سے دیکھنے والا۔ جس کے سمان دوسرا نہیں۔ سب ایک روپ بہو روپ۔ کمل نین۔ کامنا کو پورن کرنے والا۔ پاپوں کا ناشک بھگوان کو نمسکار ہے :: ۱۲ ::

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

रुद्रोबहुशिराबभ्रुर्विश्वयोनिःशुचिश्रवाः। अमृतःशाश्वतःस्थाणुर्वरारोहोमहातपाः॥१३॥

अर्थ—भक्तोंके दुःखको देख दयासे रोनेवाला · बहुत हैं शिर जिसके · प्रसन्न करनेवाला · संसार को उत्पन्न करनेवाला · भली भांति प्रार्थना को सुननेवाला · अमृतरूप अविछिन्न · स्थिररूप · श्रेष्ठ गरुड़ है सवारी जिनकी। ऐसे भगवानको नमस्कार है॥१३॥

सर्वगःसर्वविद्भानुर्विष्वक्सेनोजनार्दनः। वेदोवेदविदव्यंगोवेदांगोवेदवित्कविः॥१४॥

अर्थ—चराचरमें व्यापक · सबको जाननेवाला · चारोंओरसेना जिसकी · भक्तों को दुःख देकर परीक्षा करनेवाले। ऋक् यजुः साम अथर्व वेदरूप · वेदोंका जाननेवाला · तत्त्वार्थ वेत्ता · शिक्षा कल्प व्याकरण निरुक्त छंद ज्योतिष इन छः अंगरूप वेदोंके तत्त्वार्थका जाननेवाला · कविरूप भगवानको प्रणाम है॥१४॥

رُدرو بھ شر ابہر ربشو یونھ شُچی
شروا ہ :: امرتھ شاشتھ تہا نر برا رو
ہو مھا تپاہ :: ۱۳ ::

ترجمہ۔ بھکتوں کے دُکھ کو دیکھ دیا سے رونے والا۔ بہت ہیں سر جسکے۔ پرسن کرنیوالا اسنسار کو اوتپن کرنیوالا بھلی بہانت پرارتھنا کو سُننے والا۔ امرت روپ اچھن استھر روپ۔ سریشٹھ۔ گرڑ ہے۔ سواری جس کی۔ ایسے بھگوان کو نمسکار ہے :: ۱۳ ::

سرگبھ سرب ودبہانر بشو کسینو
جنار دنہ :: ویدو وید ودویا نگو
ویدانگو ویدوتکبھ :: ۱۴ ::

ترجمہ۔ چراچر میں بیاپک۔ سب کو جاننے والا۔ چاروں اور سینا جسکی۔ بھکتوں کو دُکھ دیکر پرکشا کرنیوالا۔ رک یجھ سام۔ اتھرب وید روپ۔ ویدوں کا جاننے والا۔ تتوارتھ بیتا۔ شکشا۔ کلپ۔ دیاکرن۔ نرت۔ چھند۔ جوتش۔ ان چھ انگ روپ ویدوں کے تتوارتھ کا جاننے والا کبی روپ بھگوان کو نمسکار ہے :: ۱۴ ::

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

लोकाध्यक्षःसुराध्यक्षोध-
र्माध्यक्षःकृताकृतिः।चतु
रात्माचतुर्व्यूहश्चतुर्दंष्ट्रश्च
तुर्भुजः॥१५॥

अर्थ–स्वर्ग मृत्यु पाताल का स्वामी। देवताओं का स्वामी · धर्म का स्वामी · शुभ अशुभ कर्मों के फलों का दाता। जाग्रत · स्वप्न · सुषुप्ति · तुरीया। इन चारों अवस्थाओं में आत्मारूप। चतुरंगिणी सेना का रचने वाले · नृसिंह रूप · चतुर्भुज भगवान को नमस्कार करत भय ॥१५॥

भ्राजिष्णुर्भोजनंभोक्तासहि
ष्णुर्जगदादिजः।अनघोवि
जयोजेताविश्वयोनिःपुनर्वसुः

अर्थ–स्वयंप्रकाश · भक्ष भोज्य लेह्य चोस्य रूप और इनका भोगने वाला। शिशुपाल आदि राक्षसों के कठोर वचनों का सहने वाला · जगत से प्रथम होने वाला · महाविष्णु · निष्पाप · विजयरूप · जीतने वाला · संसार की उत्पत्ति का स्थान · वारंवार अवतार लेने वाले भगवान को नमस्कार है ॥१६॥

لوکادِہکشھہ سُرادِہکشو دہرمادِہکشھہ
کرِتاکرِتھہ ٭ چتُرآتما چتُربیوُہش
چتُردِنگشٹرش چتُربھجا ٭ ۱۵ ٭

ترجمہ۔ سُرگ مِرتیو پاتال کا سوامی۔ دیوتاوں کا سوامی
دہرم کا سوامی۔ شُبھہ اشُبھہ کرموں کے پھلوں کا داتا
جاگرت۔ سُپن۔ سُکہپت۔ تُریا۔ اِن چاروں اوستہاوں
میں آتما روپ۔ چترنگنی سنیا کا رچنے والے نرسنگہ روپ
چتُربھج بھگوان کو نمسکار ہے ٭ ۱۵ ٭

بھراجشنُر بھوجنم بھوکتا سہشنُر جگدا
دِجھہ ٭ انگھو وِجیو جیتا بشویونِھہ
پُنربسُھہ ٭ ۱۶ ٭

ترجمہ۔ سویم پرکاش۔ بھکش بھوجیہ لیہہ چوسیہ روپ
اور ان کا بھوگنے والا۔ شِشپال آدِ راکشسوں کے
کٹھور بچنوں کا سہنے والا۔ جگت سے پرتھم ہونیوالا
مہابشنُو۔ نِشپاپ۔ وِجے روپ۔ جیتنے والا۔
سنسار کی اوتپتّی کا استھان۔ بارم بار اوتار لینے
والے بھگوان کو نمسکار ہے ٭ ۱۶ ٭

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

उपेन्द्रो वामनः प्रांशुरमोघः शु-
चिरूर्जितः। अतीन्द्रः संग्रहः
सर्गो धृतात्मा नियमो यमः॥ १७

अर्थ – इन्द्र के समीप रहने वाला · वाम
नावतार · सबसे ऊंचा · बहुरूप · पवित्र ·
ब्रह्मारूप · संहार करने वाला रुद्र · सृष्टि
रूप · आत्मरूप सत्यसंकल्प धर्मराज
रूप हो · न्याय करने वाले भगवान के ·
अर्थ नमस्कार है ॥ १७ ॥

वेद्यो वैद्यः सदायोगी वीरहा
माधवो मधुः। अतीन्द्रियो महा
मायो महोत्साहो महाबलः॥ १८

अर्थ – जानने योग्य · समस्त रोगों का
दूर करने वाला धन्वंतरी रूप · सदा स-
माधि लगाये योगी रूप · शूरवीरों को
हराने वाला · माया को आज्ञा में चला
ने वाला · सर्वप्रिय पुष्परस रूप · आ
त्मा रूप · बड़ी माया रचने वाला · नि
त्य आनन्दरूप बड़े पराक्रमी परमेश्व
र को नमस्कार है ॥ १८ ॥

اُپیندرو بامنہہ پرانشُورموگھہ شُچ
رُرجِتھہ ॥ اتِندرہ سنگرِہہ سرگو
دِہرتاتمانیمویمہ ॥ 17 ॥
ترجمہ۔ اندر کے سمیپ رہنے والا۔ بامناوتار سب سے
اونچا۔ بھوروپ۔ پوتر۔ برہمارُوپ سنگھار کرنیوالا
رودر۔ سرشٹی روپ۔ آتم روپ۔ ستیہ سنکلپ دہرم
راج روپ ہو۔ نیائے کرنیوالے بھگوان کے ارتھہ پرنام ہے 17
وِیدیو وَیدیہ سدایوگی بیرہا مادہوو
مدُہ ॥ اتِندریو مہامایو مہوت
ساہو مہابلہ ॥ 18 ॥
ترجمہ۔ جاننے یوگ سمست روگوں کا دور کرنیوالا دہنونتری
روپ۔ سدا سمادہ لگائے یوگی روپ۔ شوربیروں کا
ہرانے والا۔ مایا کو اگیا میں چلانے والا۔ سرب پریہ
پُشپ رس روپ۔ آتم روپ بڑی مایا رچنے والا
نتیہ انند روپ بڑی پراکرمی پرمیشور کو نمسکار
ہے۔ ॥ 18 ॥ 18 ॥

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

महाबुद्धिर्महावीर्यो महाश-
क्तिर्महाद्युतिः। अनिर्देश्यव
पुः श्रीमानमेयात्मा महाद्रिधृ-
क् ॥ १९ ॥

अर्थ – महाबुद्धि है जिसकी · बहुत है प
राक्रम जिसका · बड़ी है सामर्थ जिसमें।
बड़ी है शोभा जिसकी · सबसे उत्तम है श-
रीर जिसका · शोभास्वरूप · अथाह बुद्धि-
वाला · सुमेरु पर्वत को धारण करने वा-
ले भगवान को नमस्कार है ॥ १९ ॥

महेष्वासो महीभर्ता श्रीनिवा-
सः सतांगतिः। अनिरुद्धः सुरान-
न्दो गोविंदो गोविदांपतिः ॥ २० ॥

अर्थ – बड़ा है धनुष जिसका · इन्द्रस्व
प · लक्ष्मी का आश्रयस्थान · श्रेष्ठ पुरुषों
को गति ज्ञान का देनेवाला · समस्त व्या
पक · देवताओं का आनन्द स्वरूप · इन्द्रि
यों के भेद जानने वाला · योगियों के
स्वामी · ऐसे भगवान को नमस्कार क-
रते भये ॥ २० ॥

مہابُدّہِر مہا بیریو مہاشکتِر مہا
دُتھہ ؞ انِردیشیہ وپُھ شری
مان مے یاتما مہادِردھرک ١٩

ترجمہ ۔ مہا بدّہی ہے جسکی ۔ بہت ہے پراکرم
جسکا ۔ بڑی ہے سامرتھہ جسمیں ۔ بڑی ہے شوبہا جسکی
سب سے اوتم ہے شریر جسکا ۔ شوبہا روپ ۔ اتھاہ بدّھی
والا ۔ سُمیر پربت کو دھارن کرنیوالے بھگوان
کو نمسکار ہے ؞ ١٩ ؞ ١٩ ؞

مہیشواسو مہی بھرتا شری نِواسہ
ستام گتِہہ ؞ انِرُدہ سُرانندو
گوبندِو گووِدام پتِھہ ؞ ٢٠ ؞

ترجمہ ۔ بڑا ہے دہنُش جسکا ۔ اندر روپ ۔ لکشمی کا
آشریہ استہان ۔ شریشٹھہ پرشوں کو گتی گیان کا
دینے والا ۔ سمست بیاپک ۔ دیوتاوں کا آنند
روپ ۔ اِندریوں کے بھید جاننے والا ۔
یوگیوں کے سوامی ۔ بھگوان کو نمسکار
ہے ؞ ٢٠ ؞ ٢٠ ؞

मरीचिर्दमनो हंसः सुपर्णो भुज
गोत्तमः। हिरण्यनाभः सुतपाः
पद्मनाभः प्रजापतिः ॥२१॥

अर्थ — मरीचिऋषीरूप · दुष्टोंकानाश
करनेवाला · सगुणनिर्गुणरूप · गरुड़
रूप · शेषरूप · विराटरूपमेंप्रकाशरू
प · सुन्दरतपरूप · कमलनाभ · ब्रह्मारू
प · ऐसे भगवानको नमस्कार है ॥२१॥

अमृत्युः सर्वदृक्सिंहः संधा
तासंधिमान्स्थिरः। अजोदुर्म
र्षणः शास्ताविश्रुतात्मासुरारि-
हा॥२२॥

अर्थ — मृत्युरहित · समस्त जगतको ·
ज्ञानचक्षु से देखनेवाला · राक्षसोंका
मारने वाला · सब जगत को धारण
करने वाला · प्रकृति पुरुषरूप · ठहरा
हुआ · अजन्मा · खोटे पुरुषों परक्रोध
करने वाला · दंडरूप · दूरसे सुननेवा
ला · देवताओं के शत्रु राक्षसों को मा-
रने वाला · जो धर्मात्मा है · उनको प्र-
णाम करते भये ॥२२॥

مریچر دمنو ہنسہ سُپرنو بھج گوتمہ
ہرنیہ نابھہ سُتپاہ پدم نابھہ پرجا
پتیھہ ؞ ۲۱ ؞

ترجمہ - مریچ رشی روپ - دُشٹونکا ناش کرنیوالا -
سرگُن - نرگُن روپ - گرڑ روپ - سیش روپ
براٹ روپ میں پرکاش روپ - سندر تپ روپ
کمل نابھہ - برہما روپ بھگوان کو نمسکار ہے ؞۲۱؞

امرتیھہ سرب درک سنگھہ سندھاتا
سندہ مانستہرہ ؞ اجو درمرشنھہ
شاستاوشرتاتما سُراریہا ؞ ۲۲ ؞

ترجمہ - مرتیو رہت سمت جگت کو گیان چکشو سے دیکھنے
والا - راکشسوں کا مارنیوالا - سب جگت کو دھارن کرنے
والا - پرکرتی پُرش روپ - ٹھہرا ہوا - اجنما - کھوٹے
پُرشوں پر کرودھ کرنیوالا - ڈنڈ روپ - دور سے سُننے والا
دیوتاؤں کے شترو راکشسونکا مارنے والا جو دھرماتما
ہے اُس کو پرنام ہے ؞ ۲۲ ؞

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

गुरुर्गुरुत्तमोधामसत्यःस-
त्यपराक्रमः।निमिषोऽनि-
मिषःस्रग्वीवाचस्पतिरुदा
रधीः॥२३॥

अर्थ – हितका उपदेशकरनेवाला· हितके उपदेशकरनेवालोंमें उत्तम· सबमतोंका धाम तीर्थरूप· सच्चा· और सत्य पराक्रम· बलरूप· निमिषादि समयरूप· कालरहित· वैजयंतीमाला धारणकरनेवाला· वृहस्पतिरूप· उदार बुद्धीरूप भगवानको नमस्कार है॥२३॥

अग्रणीर्ग्रामणीःश्रीमान्न्यायो
नेतासमीरणः।सहस्रमूर्द्धाबि
श्वात्मासहस्राक्षःसहस्रपात्॥२४

अर्थ – सब चराचरके आगे रहनेवाले निवासरूप· शोभायमान· न्यायकारी· रक्षाकर्त्ता· पवनरूप· सहस्र सिर वाला संसारका आत्मारूप अनन्त नेत्रों वाला· अनन्त पैरों से चलनेवाला· ऐसे भगवान् को प्रणाम है॥२४॥

گورُرگورُتمّودھاماسَتّیہ ستیہ پراکرمہ
نمشونمشہ سرگوی باچسپت رُدا
رَدھیھہ ۲۳

ترجمہ۔ ہت کا اوپدیش کرنیوالا ہت کے اوپدیش کرنیوالوں میں اُوتّم سب متوں کا دھام تیرتھ روپ۔ سچّا۔ اور ستّیہ پراکرم۔ بل روپ۔ نمکھادِ سمے روپ۔ کال رہت۔ بیجینتی مالا دھارن کرنیوالا۔ برہسپتی روپ۔ اُودار بدّھی روپ بھگوان کو نمسکار ہے ۲۳

اگرنی گرامنیہ شری مان نیایو
نیتا سمیرنہ سہسر مُوردھا
بشواتما سہسر اکشہ سہسر پات ۲۴

ترجمہ۔ سب چراچر کے آگے رہنے والا۔ نواس روپ۔ شوبھائے مان۔ نیائے کاری۔ رکشا کرتا۔ پَون روپ۔ سہسر سر والا۔ سنسار کا آتما روپ۔ اننت نیتروں والا۔ اننت پیروں سے چلنے والا۔ ایسے بھگوان کو پرنام ہے ۲۴

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

आवर्तनो निवृत्तात्मा संवृतः सं
प्रमर्दनः । अहःसंवर्तको वह्नि
रनिलो धरणीधरः ॥२५॥

अर्थ – अवतार रूप धारण करनेवा-
ला · इन्द्रियादि से परे · निर्गुण रूप होने
वाला · राक्षसों का मर्दन करनेवाला · ज्ञा
नरूप · संवर्तक नाम · मेघरूप · अग्नि
रूप · पवनरूप · शेषनागरूप · भगवा
न के अर्थ प्रणाम है ॥ २५॥

सुप्रसादः प्रसन्नात्मा विश्वधृ
ग्विश्वभुग्विभुः । सत्कर्ता
सत्कृतः साधुर्जह्नुर्नारायणो
नरः ॥२६॥

अर्थ – भली भांति प्रसन्न रूप · सदाप्र
सन्न रहनेवाला · दुःखत्रय रहित · संसा
र का धारण करनेवाला · संसार के-
सुख का भोगनेवाला · सत्य का बनाने
वाला आदर के योग्य · भक्तों के काज-
सिद्ध करनेवाला · जह्नुरूप · जल में
निवास करनेवाला · नररूप भगवान
को प्रणाम है ॥ २६॥

آبرتنو نبرتاتما سبرتہ سم پرمردنہ آہت
سنبرت کو بنہی رنلو دہرنی دہرہ ۲۵ ::

ترجمہ-اوتار روپ دہارن کرنیوالا-اندریاد سے پرے-
نرگن روپ ہونیوالا-راکشسوں کا مردن کرنیوالا گیان
روپ-سنبرتک نام میگہہ روپ-اگنی روپ-پون
روپ-شیس ناگ روپ بھگوان کے ارتھ
پرنام ہے :: ۲۵ ::

سپرسادہ پرسناتما بشو دہرگ بشو
بھگ ببھہ :: ست کرتا ست کرتہ
سادہر جہنر نارائنو نرہ :: ۲۶ ::

ترجمہ-بھلی بہانتی پرسن روپ-سدا پرسن رہنے
والا-دکھ تریہ رہت-سنسار کو دہارن کرنیوالا سنسار
کے سکھ کا بہوگنے والا-ستیہ کا بنانیوالا-آدر کے
یوگ-بہگتوں کے کاج سدہ کرنے والا-
جہنو روپ-جل میں نواس کرنیوالا-نر روپ-
بھگوان کو پرنام ہے :: ۲۶ ::

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

असंख्येयोऽप्रमेयात्मा विशिष्टः
शिष्टकृच्छुचिः। सिद्धार्थः सि
द्धसंकल्पः सिद्धिदः सिद्धिसा
धनः ॥२७॥

अर्थ - जिसका वारापार नहीं · जो अनुमान से न आसके सब में मिला हुआ वेद विहित · अनुष्ठान का करने वाला · पवित्र रूप · सिद्ध प्रयोजन · जो चाहे सो करे · अष्ट सिद्धियों का दाता · सिद्धियों के साधने वाले परमेश्वर को प्रणाम करते भये ॥२७॥

वृषाही वृषभो विष्णुर्वृषपर्वा
वृषोदरः। वर्द्धनो वर्द्धमानश्च
विविक्तः श्रुतिसागरः ॥२८॥

अर्थ - कामनाओं के सिद्ध करने वाला धर्मरूप · व्यापक · धर्म पर्वरूप · भीमसेन रूप · वृद्धी करने वाला · और बढ़ेगा सबसे न्यारा · श्रुति नाम वेद का समुद्र · अर्थात् जिससे वेद प्रगट हुए हैं · ऐसे चैतन्य भगवान को नमस्कार है ॥२८॥ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥

اسنکھیے یو پرمے یاتما وِشِشٹھ شِشٹ
کرت چھچ :: سِدّھارتھ سِدّھ
سنکلپھ سِدّھ وِدہ سِدّھ سادہنہ ۲۷

ترجمہ جسکا وارا پار نہیں - جو انماں سے نہ آسکے سب میں ملاہوا - وید وِہت - انشٹہاں کا کرنیوالا - پوتر روپ شدّہ پر یوجن - جو چاہے سو کرے - اشٹ سدّہیوں کا داتا - سدّھیوں کے سادھنے والے - پرمیشور کو پرنام ہے ؞ ۲۷ ؞

برکھاہی برکھبھو وشنر برکھ پروا
برکھودرہ :: بردھنو بردھمانشچے بیکت
شرت ساگرہ ؞ ۲۸ ؞

ترجمہ - کامناؤں کا سدّہ کرنیوالا - دہرم روپ بیاپک دہرم پرب روپ - بھیم سین روپ - بردھی کرنے والا - اور بڑھے گا سب سے نیارا - شرتی نام وید کا سمدر - ارتہات جس سے وید پرگٹ ہوئے ہیں ایسے چیتن بھگوان کو نمسکار ہے ؞ ۲۸ ؞

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

सुभुजो दुर्द्धरो वाग्मी महेन्द्रो व-
सदो वसुः। नैकरूपो वृहद्रूपः
शिपिविष्टः प्रकाशनः ॥२९॥

अर्थ – सुन्दरभुजा वाला · कठिनतासे वशमें आनेवाला · बहुत बोलनेवाला · इन्द्ररूप · धनका देनेवाला · धनरूप · अनेकरूपधारी · सबसे बड़ा · विराटरूप · महादेवरूप · प्रकाशरूप · ऐसे भगवानको प्रणाम है ॥२९॥

ओजस्तेजोद्युतिधरः प्रकाशा-
त्मा प्रतापनः। ऋद्धः स्पष्टाक्ष-
रो मंत्रश्चन्द्रांशुर्भास्करद्युतिः ३०

अर्थ – बल दाह प्रकाशको धारन करनेवाला · चांडालरूप · दुष्टोंका तपानेवाला · ऋद्धिरूप · प्रत्यक्ष · अवतारधारी · अविनाशी · मंत्ररूप · वेदमूर्ति · चन्द्रकिरणरूप · सूर्य्यरूप · तुल्यकांति वाले · ऐसे परमेश्वरको प्रणाम है ॥३०॥

سبھجو دُردھرو واگمی مہیندرو
وسدو وسُھ :: نیک رُوپو
برہدرُوپہ شپ وِشٹھ
پرکاشنھ :: ۲۹ ::

ترجمہ۔ سُندر بھجا والا کٹھنتا سے بس میں آنیوالا بہت بولنے والا۔ اِندر روپ۔ دھن کا دینیوالا۔ دھن روپ۔ انیک روپ دھاری۔ سب سے بڑا۔ براٹ روپ۔ مہادیو روپ۔ پرکاش روپ بھگوان کو پرنام ہے :: ۲۹ ::

اوجستیجو دُتِ دھرہ پرکاشاتما
پرتاپنھ :: رِدھہ سپشٹاکشرو
منترش چندرام شُربھاسکردُتِھ :: ۳۰ ::

ترجمہ۔ بل داہ پرکاش کو دھارن کرنیوالا چانڈال روپ دُشٹوں کا تپانے والا۔ رِدھ روپ۔ پرتکش اوتار دھاری۔ ابناشی۔ منتر روپ۔ وید مورتی۔ چندر کرن روپ۔ سوریہ روپ تُلیہ کانتی والے پرمیشور کو پرنام ہے :: ۳۰ :: ۳۰ ::

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

अमृतांशुद्भवोभानुःशशिवि-
न्दुःसुरेश्वरः।औषधंजगतः
सेतुःसत्यधर्मपराक्रमः ३१

अर्थ – अमृतरूपी किरणोंको उत्पन्न करनेवाला · भानुरूप · अमृत पानक रनेवाला ललाटसे · अमृतरूप · इन्द्र रूप · औषधीरूप · रामचन्द्ररूप · सत्यधर्मरूपी · वलके धारण करने-वाला जो ईश्वर है उसको प्रणाम है ३१

भूतभव्यभवन्नाथःपवनःपा
वनोऽनलः।कामहाकामकृ-
त्कांतःकामःकामप्रदःप्रभुः
॥३२॥

अर्थ – तीनोंकालकास्वामी · वायुरूप · पवित्ररूप · अग्निरूप · कामदेवको भस्मकरनेवाला · शिवरूप · कामदेवके उत्पन्नकरनेवाला · कृष्णरूप · मनोहररूप · कामरूप · कामनाका देनेवाला स्वामीभगवानजोहैं उनकोनमस्कारहै। ॥३२॥

امرتانشد بھو وبھانھ ششش بندہ
سُرشیورہ ؛؛ اوشدہم جگتھ سیتھ
ستیہ دہرم پراکرمھ ؛؛ ۳۱ ؛؛

ترجمہ- امرت روپی کرنوں کو اوتپن کرنے والا- بھانوروپ- امرت پان کرنیوالا- للاٹ سے امرت روپ- اندرروپ- آوشدہی روپ- رامچندر روپ- ستیہ دہرم روپی- بل کا دہارن کرنیوالا- جو ایشور ہے اسکو پرنام ہے ؛؛ ۳۱ ؛؛

بہوت بہوبہونا تھہ پونہ پاونو
نلھ ؛؛ کام ہا کام کرت کانتھ کامہ
کام پردہ پربہو ؛؛ ۳۲ ؛؛

ترجمہ- تینوں کال کا سوامی- بایو روپ- پوتر روپ اگنی روپ- کامدیو کو بھسم کرنے والا- شیو روپ کام دیو کا اوتپن کرنے والا- کرشن روپ- منوہر روپ- کام روپ- کامنا کا دینے والا سوامی بھگوان جو ہے اوسکو نمسکار ہے ؛؛ ۳۲ ؛؛

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

युगादिकृद्युगावर्त्तोनैकमायो महाशनः। अदृश्योव्यक्तरूपश्च सहस्रजिदनन्तजित् ३३

अर्थ — युगों का आरंभ करने वाला युगों को भ्रमाने वाला अनेक मायारूप प्रलय करने वाला वाणी से और मन से परे सगुण रूप सहस्रों को जीतने वाला अनगिनतों को जीतने वाला जो है उसके अर्थ नमस्कार है ॥ ३३॥

इष्टोविशिष्टःशिष्टेष्टःशिखंडीनहुषोवृषः। क्रोधहाक्रोधकृत्कर्त्ताविश्ववाहुर्महीधरः॥ ३४॥

अर्थ — उपासना के योग्य सब में मिला हुआ शिव ब्रह्मादिकों का उपास्य देव मोरमुकटधारी नहुष राजा रूप धर्मरूप क्रोध का नाशक रामचन्द्र रूप क्रोध करने वाला परशुराम अवतार जगत का करने वाला चारों ओर हाथों वाला पृथ्वी को धारण करने वाले परमेश्वर को प्रणाम है ॥ ३४॥

یُگادِکرِدُگاورتو نیک مایو مہاشنہ ؛؛ ادرِشیو بیکت رُوپشچ سہسر جِدنَنت جت ؛؛ ۳۳ ؛؛ ترجمہ

یگوں کا آرنبھ کرنیوالا۔ یگونکو بھرمانیوالا انیک مایا روپ پرلے کرنیوالا۔ بانی سے اور من سے پرے سگُن روپ سہسروں کو جیتنے والا۔ انگنتوں کو جیتنے والا۔ جو ہے اُسکے ارتھ پرنام ہے ؛؛ ۳۳ ؛؛

اِشٹو وِشِشٹہ شِشٹیشٹہ شِکھنڈی نہُشو برکھہ ؛؛ کرودھ ہا کرودھ کرت کرتا بشو باہُر مہی دھرہ ؛؛ ۳۴ ؛؛

اوپاسنا کے یوگ سب میں ملاہوا شیو برہمادِکوں کا اوپاسیہ دیو۔ مورمکٹ دھاری نہُش راجا روپ۔ دھرم روپ۔ کرودھ کا ناشک رام چندر روپ کرودھ کرنیوالا پرشرام روپ اوتار جگت کا کرنیوالا چاروں اور ہاتھوں والا پرتھوی کو دھارن کرنیوالے پرمیشر کو پرنام ہے ؛؛ ۳۴ ؛؛

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

अच्युतःप्रथितःप्राणःप्राणदो
वासवानुजः।अपांनिधिरधि
ष्ठानमप्रमत्तःप्रतिष्टितः ३५
अर्थ – जिसकानाश नहो · विस्तार-
रूप · प्राणवायुहो जिलानेवाला · प्राणों
कादाता · वामनाअवतार · समुद्ररूप ·
सबजगतकाअधिष्ठान · स्थानरूप · म
दरहित · प्रतिष्ठित भगवानको प्रणाम
है ॥ ३५ ॥

स्कंदःस्कंदधरोधुर्योवरदोवा-
युवाहनः।वासुदेवोवृहद्भानु
रादिदेवः पुरंदरः ॥ ३६ ॥
अर्थ - स्वामकार्तिकरूप · स्वामकार्तिक
को धारण करने वाला · सबकेअग्रणी
वरका देने वाला · वायुपर सवार हो-
ने वाला · मनरूप · सबमें बसने वा-
ला · बड़ासूर्य्यरूप · आदिदेव · इन्द्र-
रूप · ऐसे परमेश्वर को प्रणाम
करते भये ॥ ३६ ॥ ॥ ९ ॥ ॥ ९ ॥ ॥ ९

اَچیُتھ پرتِھتھ پرانہ پران دووا سوا
نُجھُہ :: اَپام ندہی رِدہِشٹھانا
مپرمتّھ پرتِشٹتھ :: ۳۵ :
جس کا ناش نہو بِستار روپ ۔ پران بایُو ہو جلانے
والا ۔ پرانوں کا داتا ۔ بامنا وتار ۔ سمدرروپ ۔ سب
جگت کا اِدہشٹھان استھان روپ ۔ مد رہت
پرتشٹت بھگوان کو پرنام ہے :: ۳۵ ::

اسکندہ اسکندہرو دہریو بر
دو بایُباہنہ :: باسُدیو و
برہد بھانُورادِ دیوہ پُرندرہ :: ۳۶ :
ترجمہ ۔ سوام کارتک روپ ۔ سوام کارتک کا
دہارن کرنیوالا ۔ سب کے اگرنی ۔ بر کا دینے والا
بایُو پر سوار ہونے والا ۔ من روپ ۔ سب میں
بسنے والا ۔ بڑا سواریہ روپ ۔ آدِ دیو ۔ اندر روپ
مہیشور کو پرنام ہے :: ۳۶ ::

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

अशोकस्तारणस्तारः शूरः शौ-
रिर्जनेश्वरः। अनुकूलः शता
वर्तः पद्मीपद्मनिभेक्षणः। ३७
अर्थ – शोक रहित · संसार से तारने
हारा · तारणरूप · शूरवीर · वसुदेवजी
के पुत्र · मनुष्यों का स्वामी · राजारूप ·
भक्तों के अनुकूल · मायारूप · भँवर-
जाल में घुमाने वाला · कमलरूप · क
मल नयन परमात्मा को प्रणाम है ३७

पद्मनाभोरविंदाक्षः पद्मगर्भ
शरीरभृत्। महर्द्धिर्ऋद्धो वृ-
द्धात्मा महाक्षो गरुडऽध्वजः
अर्थ – कमल है नाभि में जिसके · क
मल के सदृश हैं नेत्र जिसके · पद्म है
उदर में जिसके · शरीर धारण करने
वाला · महान संपद वाला · ऋद्धिरू
प · वड़ों का आत्मा · फैली हुई इन्द्रि-
यां जिसकी · गरुड़ है सवारी जिसकी
ऐसे भगवान को नमस्कार है ॥ ३८॥

اَشوکستارَنستارہ شورہ شَورِرِ
جنیشورہ ॥ اَنکولَھ شتا برتہ
پدمی پدم نبھیکشنہ ॥ ۳۷ ॥
ترجمہ۔ شوک رہت۔ سنسار سے تارنے ہارا۔ تارن روپ
شور بیر۔ بسدیو کا پُتر۔ منشوں کا سوامی۔ راجا روپ
بھکتوں کا انکول۔ مایا روپ بھنور جال میں گھمانیوالا۔
کمل روپ کمل نین پرماتما کو پرنام ہے ॥ ۳۷ ॥

پدم نابھو رِبندا کشہ پدم گربھ
شریربہرت ॥ مہرّدھی رِدّھو
برِدّھاتما مہاکشو گرڑدھجہ ॥ ۳۸ ॥
ترجمہ۔ کمل ہے نابھی میں جسکے۔ کمل کے سدرش
ہیں نیتر جس کے۔ پدم ہے اُودر میں جسکے شریر دھارن
کرنے والا۔ مہان سنپد والا۔ رِدّھی روپ۔
بڑوں کا آتما۔ پھیلی ہوئی اندریاں جسکی گرڑ ہے
سواری جس کی ایسے بھگوان کو نمسکار ہے ॥ ۳۸ ॥

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

अतुलः शर्वो भीमः समयज्ञो हविर्हरीः । सर्वलक्षणलक्षण्यो लक्ष्मीवान् समितिंजयः ॥३९॥

अर्थ – जो तौलने में न आवे · सरभंग रूप · भयावनी सूरत · नरसिंह रूप · सबको समान दृष्टी से देखने वाला · यज्ञ भाग लेने वाला · सब लक्षणों कर के युक्त · कुबेर रूप · युद्ध जीतने वाले · ऐसे परमात्मा को प्रणाम है ॥ ३९॥

विक्षरो रोहितो मार्गो हेतुर्दामोदरः सहः । महीधरो महाभागो वेगवानमिताशनः ॥४०॥

अर्थ – विशेष करके नाशमान जगत रूप · रजोगुण रूप · मार्ग रूप · कारण रूप · यशोदा ने रस्सी कमर से बांधी जिसके · सहने वाला · क्षमा रूप · पर्वत रूप · पृथ्वी का भाग रूप · चंचल रूप · अप्रमाण भोजन करने वाला · भीमसेन रूप · जो ईश्वर हैं उनको प्रणाम है ॥४०॥

اَتُلھہ شَر بھو بھیمھہ سَم یگیو ہوِر
ہریھہ ؛؛ سرب لکشن لکشنیو
لکشمی وان سَمِتم جیھہ ؛؛ ۳۹ ؛؛

ترجمہ۔ جو تولنے میں نہ آوے۔ سر بھنگ روپ۔ بھیاونی مورت۔ نرسنگھ روپ۔ سب کو سماں درشٹی سے دیکھنے والا۔ یگیہ بھاگ لینے والا۔ سب لکشنوں کرکے یکت۔ کبیر روپ۔ یُدھ جیتنے والے پرماتما کو پرنام ہے ؛؛ ۳۹ ؛؛

وِکشرو روہتو مارگو ہیتُر دامودرہ
سہھہ ؛؛ مہی دھرو مہابھاگو
بیگوان مِتا شنھہ ؛؛ ۴۰ ؛؛

ترجمہ۔ وِشیش کرکے ناش مان جگت روپ۔ رجوگن روپ۔ مارگ روپ۔ کارن روپ یشودا نے رسی کمر میں باندھی جسکے۔ سہنے والا۔ چھما روپ۔ پربت روپ۔ پرتھوی کا بھاگ روپ۔ چنچل روپ۔ اپرمان بھوجن کرنیوالا۔ بھیم سین روپ جو ایشر ہے اسکو پرنام ہے ؛؛ ۴۰ ؛؛

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

उद्भवः क्षोभणो देवः श्रीगर्भः प-
रमेश्वरः । करणं कारणं कर्त्ता
विकर्त्ता गहनो गुहः ॥४१॥

अर्थ - उत्पत्तीरूप क्रोधरूप प्रका
शवान अनेक प्रकारकी विभूतिहैं जि
समें · योगीजनों से जाना हुआ ईश्वर ·
आश्रयरूप कारणरूप · संसारके ब
नानेवाला · तथा फैलानेवाला · गूढ़ा
शय स्वामकार्तिक रूप · ऐसे परमेश्वर
को प्रणाम है ॥४१॥

व्यवसायो व्यवस्थानः संस्था
नः स्थानदो ध्रुवः । परर्द्धिः परमः
स्पष्टस्तुष्टः पुष्टः शुभेक्षणः ४२

अर्थ - आजीविरूप · ठीकठीक का
म करनेवाला · चित्तका विश्राम देनेवा
ला · अचलरूप · ब्रह्मविद्यारूप · यो
गीजनों का उपास्य · प्रत्यक्षरूप · सदा
प्रसन्न रहनेवाला · पुष्टरूप · मोटा ·
सुंदर हैं नेत्र जिसके ऐसे ईश्वरको
प्रणाम है ॥४२॥

اُدبھوہ شوبھنو دیوہ شری گربھہ
پرمیشورہ :: کرنم کارنم کرتا بکرتا
گہنو گُہہ :: ۴۱ ::

ترجمہ۔ اوتپتی روپ۔ کرودہ روپ۔ پرکاشواں۔
انیک پرکار کی بہھوتی ہیں جس میں۔ یوگی جنوں سے
جانا ہوا ایشور۔ آشریہ روپ۔ کارن روپ۔ سنسار کا
بنانیوالا تتھا پھیلانیوالا۔ گوڑھا شئے سوام کارتک
روپ پرمیشور کو پرنام ہے :: ۴۱ ::

بِوسایو بوستھانہ سنستھان دو
دُھروہ :: پرردھی پرمھہ سپشٹش
تُشٹھ پشٹھ شُبھیکشنا :: ۴۲ ::

ترجمہ۔ آجیوکا روپ۔ ٹھیک ٹھیک کام کرنے والا۔
چت کا بشرام دینے والا۔ اچل روپ برمھ
ودیا روپ۔ یوگی جنوں کا اُپاسیہ پرتکش
روپ۔ سدان پرسن رہنے والا۔ پشٹ
روپ موٹا۔ سُندر ہیں نیتر جس کے۔ ایسے
ایشور کو پرنام ہے :: ۴۲ ::

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

रामो विरामो विरजो मार्गो नेयो नयोनयः। वीरः शक्तिमतां श्रेष्ठो धर्मो धर्म विदुत्तमः ॥४३॥

अर्थ—योगी जिसमें रमण करें विश्राम रूप रजोगुण रहित धर्म मार्ग रूप प्राप्त होने योग्य न्यायकारी भक्तों के अर्थ अन्य रूप शूरवीर बलवानों में श्रेष्ठ धर्म रूप धर्म जानने वालों में उत्तम रूप ईश्वर को प्रणाम है ॥४३॥

वैकुण्ठ पुरुषः प्राणः प्राणदः प्रणवः पृथुः। हिरण्यगर्भः शत्रुघ्नो व्याप्तो वायुरधोक्षजः ॥४४॥

अर्थ—वैकुंठ धाम रूप सब जीवों में गुप्त स्थित प्राण वायु रूप प्राणों का देने वाला प्रणव रूप पृथु का अवतार ब्रह्मा रूप शत्रुओं का मारने वाला व्यापक वायु रूप इन्द्रियों से परे जो परमेश्वर है उसको प्रणाम है ॥४४॥

॥छ॥ ॥छ॥ ॥छ॥ ॥छ॥

رامو براموبرجو مارگو نیونیونیہ
بیرہ شکت متام سریشٹو
دہرمو دہرم ودتمہ ؞ ۴۳

ترجمہ۔ یوگی جس میں رمن کریں بشرام روپ۔ رجوگن رہت۔ دہرم مارگ روپ۔ پراپت ہونے یوگیہ نیاے کاری۔ بھکتوں کے ارتھ انیہ روپ شور بیر بلوانوں میں سریشٹھ۔ دہرم روپ۔ دہرم جاننے والوں میں اُتم روپ ایشور کو پرنام ہے ؞ ۴۳

بیکنٹھ پرشہ پرانہ پران دہ پرنوہ
پرتھہ ؞ ہرنیہ گربھہ شترگھنو بیاپت
بایوردہوکشجہ ؞ ۴۴

ترجمہ۔ بیکنٹھ دہام روپ۔ سب جیووں میں گپت استہت۔ پران بایو روپ۔ پرانوں کا دینے والا پرنو روپ۔ پرتھ کا اوتار۔ برہما روپ۔ شتروں کا مارنے والا۔ بیاپک۔ بایو روپ۔ اندریوں سے پرے جو پرمیشور ہے اسکو پرنام ہے ؞ ۴۴

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

ऋतुःसुदर्शनःकालःपरमेष्ठी
परिग्रहः।उग्रःसम्वत्सरोदक्षो
विश्रामोविश्वदक्षिणः॥४५॥

अर्थ-छहोंऋतुरूप-सुदर्शनचक्ररूप-कालभगवान-ब्रह्मारूप-परिकरूप-महादेवरूप-सम्बत्सरद्वादसमासवाला-बड़ाचतुर-शांतरूप-संसारसेरहित-भगवानकेअर्थनमस्कार है॥४५॥

विस्तारःस्थावरःस्थाणुप्रमा
णंवीजमव्ययं।अर्थोऽनर्थो
महाकोशोमहाभोगोमहाधनः
॥४६॥

अर्थ-सबस्थानोंमेंफैलाहुआ-ठहराहुआ-स्थिररूप-माननीय-संसारकावीजरूप-अविनाशी-धनरूप-प्रयोजनसेरहित-महाकोशअर्थात् सबविद्याओंकानिधि-अत्यन्तभोग-सुखरूप-बड़ाधनरूप-ऐसेभगवानकोप्रणामहै॥४६॥

رِتھہ سُدرشنھہ کالھہ پرمیشٹی پری
گرہھہ :: اُگرہ سمبت سرو دکشو
بِشرامو بِشو دکشنھہ :: ۴۵ ::

ترجمہ چھہوں رِت روپ - سُدرشن چکر روپ کال بھگوان - برہما روپ - پرکر روپا مہادیو روپ سمبت سرد وادس ماس والا - بڑا چتر - شانت روپ سنسار سے رہت بھگوان کے ارتھہ نمسکار ہے :: ۴۵ ::

وِستارہ استھاورہ ستھانو پرمانم
بیج مویم :: ارتھو نرتھو مہا
کوشو مہا بھاگو مہا دھنھہ :: ۴۶ ::

ترجمہ سب استھانوں میں پھیلا ہوا - ٹھہرا ہوا - استھر روپ مان نییہ - سنسار کا بیج روپ - ابناشی دھن روپ - پریوجن سے رہت - مہا کوش - ارتھات سب وِدیاؤں کا ندھی - اتینت بھوگ سُکھہ روپ - بڑا دھن روپ بھگوان کو پرنام ہے :: ۴۶ :: ۴۶ ::

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

अनिर्विण्णःस्थविष्ठोभूर्द्धर्मयूपोमहामखः। नक्षत्रनेमिर्नक्षत्रीक्षमःक्षामःसमीहनः ४७

अर्थ – लज्जारहित परमहंसरूप। सदा रहनेवाला · अंतरिक्षरूप · धर्मकास्तंभ · महायज्ञरूप · शिशुमार और चन्द्ररूप · सबसे ऊँचा भगवाला · क्षमारूप · सूक्ष्मरूप · श्रेष्ठ इच्छा करने वाले ईश्वर को प्रणाम है ॥ ४७ ॥

یگیہ اِجّو مہجینچ کرتھ ستر مستام گتھ
سرب درشی دمکتاتما سرگیو گیان مُتّم ۔۔ ۴۸ ۔۔

یگیہ اِجّو مہجینچ کرتھ ستر مستام گتھ
سرب درشی دمکتاتما سرگیو گیان مُتّم ۔۔ ۴۸ ۔۔

انرو ننہ ستھ وشٹو بھوردہم یو پو
مہامکھہ ۔۔ نکشتر نیم نکشتری
چھمہ چھامحہ سمیہن ۔۔ ۴۷ ۔۔

ترجمہ۔ لجّارہت پرم ہنس روپ۔ سدا رہنے والا۔ انت رکش روپ۔ دہرم کا استو۔ مہایگیہ روپ۔ ششومار اور چندر روپ۔ سب سے اونچا بھگ والا۔ چھما روپ۔ سوکشم روپ۔ سرشیٹھ اچّھا کرنیوالے ایشور کو پرنام ہے ۔۔ ۴۷ ۔۔

यज्ञइज्योमहेज्यश्चक्रतुःसत्रंसतांगतिः। सर्वदर्शी विमुक्तात्मासर्वज्ञो ज्ञानमुत्तमम् ४८

अर्थ – यज्ञरूपभगवान · सबोंकापुज्य महानपुज्य · यज्ञाऽवतार · साक्षात् यज्ञका अंग · सज्जनोंको प्राप्त होने वाला · सबजीवों का द्रष्टा · सबसे न्यारा · सबको जानने वाला · ज्ञानरूप सबसे बड़े परमेश्वर को नमस्कार है ॥

ترجمہ۔ یگیہ روپ بھگوان۔ سبھوں کا پوجیہ۔ مہا پوجیہ۔ یگیاوتار۔ ساکشات یگیہ کا انگ۔ سجّنوں کو پراپت ہونے والا۔ سب جیووں کا درشٹا۔ سب سے نیارا۔ سب کو جاننے والا۔ گیان روپ۔ سب سے بڑے پرمیشور کو نمسکار ہے ۔۔ ۴۸ ۔۔

॥४८॥ ॥छ॥ ॥छ॥ ॥छ॥ ॥

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

सुव्रतः सुमुखः सूक्ष्मः सुघोषः
सुखदः सुहृत्। मनोहरोजि-
तक्रोधोवीरबाहुर्विदारणः ॥४९
अर्थ — सुन्दर है संकल्प जिनका औ
र सुहावना मुख · सूक्ष्मस्वरूप · वेदस्व
प · सबका देनेवाला · भक्तोंका मित्र ·
मनको हरनेवाला · जीता है क्रोध जि
सने · आजानुतक हैं हाथ जिसके ·
हिरण्यकश्यपुका पेट फाड़नेवाला ·
नृसिंह भगवानको नमस्कार है ॥४९॥
स्वापनः स्ववशो व्यापी नैका
त्मानैककर्मकृत्। वत्सरोव-
त्सलोवत्सीरत्नगर्भो धनेश्वरः ॥५०
अर्थ — शेषशायी स्वाधीन व्यापक
अनेक आत्मारूप · अनेक कर्मकरने
वाला · द्वादशमासरूप · कृपालु · सब
में बसने वाला · अनेक रत्न हैं गर्भ में
जिसके · ऐसा पृथ्वीरूप · कुबेरस्व
रूप भगवानको नमस्कार है ॥ ५०॥

سُبرتہ سُمکھہ سُکشمہ سُگھوشہ سُکھدہ سُہرت
منوہرو جِت کرودھو بیر باہُر ودارنہ ۴۹
ترجمہ - سندر ہے سنکلپ جسکا - اور سُہاونا مُکھ - سُکشم روپ
وید روپ - سب کا دینے والا - بھکتوں کا مِتر - من کو
ہرنے والا - جیتا ہے کرودھ جسنے - آجانُتک ہیں
ہاتھ جسکے - ہرنیکشیپ کا پیٹ پھاڑنے والا - نرسنگھ
بھگوان کو نمسکار ہے ۰۰ ۴۹ ۰۰
سواپنہ سُوشو ویاپی نیکا تمانیک
کرم کرت ۰۰ وتسرو وتسلو وتسی
رتن گربھو دھنیشورہ ۰۰ ۵۰ ۰۰
ترجمہ - شیش شائی سوادھین بیاپک - انیک
آتما روپ - انیک کرم کرنے والا - دوادش ماس
روپ - کرپالو - سب میں بسنے والا - انیک رتن
ہیں گربھ میں جس کے - ایسا پرتھوی روپ -
کُبیر سروپ بھگوان کو نمسکار ہے ۰۰ ۵۰ ۰۰

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

धर्मगुब्धर्मकृद्धर्मीसदसत्-
क्षरमक्षरम् । अविज्ञातासह
स्रांशुर्विधाताकृतलक्षण:५१
अर्थ - धर्मकारक्षक · धर्मकरनेवा
ला · धर्मरूप · असत्‌रूप · अविनाशी
नाशरूप · नजाननेवाला · सूर्यरूप ·
ब्रह्मारूप · कियेहुए कर्मोंका देखने
वाला जो ईश्वर है उसको नमस्कार है
॥५१॥ ॥५१॥ ॥५१॥ ॥५१॥ ॥५१॥

گبھرم گُپ دھرم کرِّد ھرمی سدستکشر
مکشرم :: اوگیاّتا سہسر ام شُو ودھاتا
کرت لکشنھ :: ۵۱ ::

ترجمہ۔ دھرم کارکشک۔ دھرم کرنے والا۔ دھرم روپ
است روپ۔ اِبناشی۔ ناش روپ۔ نجاننے
والا۔ سوَریہ روپ۔ برہما روپ۔ کیئے ہوئے
کرموں کا دیکھنے والا۔ جو ایشور ہے اُسکو نمسکار ہے :: ۵۱ ::

गभस्तिनेमि:सत्वस्थ:सिंहो-
भूतमहेश्वर: । आदिदेवोमहा
देवो देवेशोदेवभृद्गुरु: ॥५२॥
अर्थ - सूर्यरूप · सतोगुणमें स्थित ·
सिंहरूप · जीवोंका ईश्वर · स्वामी · सं
सार से प्रथम एक आपही आपरूप ·
सबसे बड़ारूप · देवताओंका ईश
देवताओंका पालन करने वाला त
था शिक्षादेनेवाला जो जगदीश
है उसको पणाम है ॥५२॥

گبھست نیمِھ ستوستھ سِنگھو
بھُوت مہیشوُرہ :: آدِ دیو وھا
دیو و دیویشی دیوبھرِدگورُھ :: ۵۲ ::

ترجمہ۔ سُوریہ روپ۔ ستوگُن میں استھّت۔
سنگھ روپ۔ جیوں کا ایشور۔ سوامی۔ سنسار
سے پرتھم ایک آپ ہی آپ روپ۔ سب سے
بڑا روپ۔ دیوتاوں کا اِیش۔ دیوتاوں کا پالن
کرنے والا جو جگدیش ہے اُس کو پرنام ہے :: ۵۲ ::

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

उत्तरो गोपतिर्गोप्ता ज्ञानगम्यः
पुरातनः। शरीरभूतभृद्भोक्ता
कपीन्द्रो भूरिदक्षिणः॥५३॥

अर्थ – ब्रह्मरूप· इन्द्रियों का स्वामी
रक्षा करनेवाला· ज्ञान से प्राप्त· पुराना
शरीररूप· शरीर का धारण करनेवा
ला· भोगरूप· सुग्रीवरूप· बहुतसी
दक्षिणा देनेवाले परमेश्वर को नम
स्कार है॥५३॥

सोमपोऽमृतपः सोमः पुरुजि
त्पुरुषोत्तमः। विनयो जयः स
त्यसंधो दाशार्हः सात्वतांपतिः
॥५४॥

अर्थ – सोमलता का रस पिलानेवा
ला· अमृत पिलानेवाला· मोहनीरूप·
अमृतरूप· पुरु को जीतनेवाला· पु
रुवंश में श्रेष्ठता दिखानेवाला· न
म्ररूप· जपरूप· सत्य में लगा हु-
आ भक्त पूज्य यदुवों के स्वामी· ऐसे
जो भगवान उनको प्रणाम है॥५४॥

اُتّرو گوپتر گوپتا گیان گمّیہ پُراتنہ ::
شریر بھوت بھرد بھوگتا کپیندرو
بھورِ دکشنہ :: ۵۳ ::

ترجمہ - برہم روپ - اندریوں کا سوامی - رکشا
کرنے والا - گیان سے پراپت - پُرانا شریر روپ
شریر کو دھارن کرنے والا - بھوگ روپ سُگریو روپ
بہت سی دکشنا دینے والے پرمیشور کو نمسکار ہے ۵۳

سوم پو مرتپہ سومہ پُرجت پُرشوتمہ
:: وِنیو جیہ ستیہ سندھو داشارہ
ساتُتام پتھہ :: ۵۴ ::

ترجمہ - سوم لتا کا رس پلانیوالا - امرت پلانے والا
موہنی روپ - امرت روپ - پُر کو جیتنے والا -
پُرُبنش میں سریشٹتا دکھانیوالا - نمر روپ جپ
روپ - ستیہ میں لگا ہوا بھکت پوجیہ یدوؤں
کے سوامی کو پرنام ہے :: ۵۴ ::

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

जीवोविनयितासाक्षी मुकुन्दो
ऽमितविक्रमः। अंभोनिधिर
नंतात्मामहोदधिशयोंतकः।
अर्थ – प्राणोंकीरक्षाकरनेवाला।
विनयकरनेवाला · साक्षीरूप · सुख
भोक्ता · अप्रमाणपराक्रमवाला · समु
द्ररूप · अंतरहितआत्मा · क्षीरसागर
मेंशयनकरनेवाला · यमराजरूप ·
भगवानकोप्रणाम है ॥ ५५॥

अजोमहार्हः स्वाभाव्योजिता
मित्रःप्रमोदनः। आनन्दोनन्द
नोनन्दः सत्यधर्मात्रिविक्रमः
॥ ५६॥

अर्थ – अजन्मा · बहुमूल्य · स्वयंप्र
काश · शत्रुओंकोजीतनेवाला · म
हान् आनन्दरूप · सदाआनन्दसु
खरूप · पुत्ररूप · सत्यधर्मवाला ·
वामनरूप · भगवानको नमस्कार
है ॥५६॥ ॥ छ॥ ॥ छ॥ ॥ छ॥

جیوو ونَیتاساکشی مُکندو مت وِکرمہ ::
ابہونِدہی رنتاتما مہودِدہ شیونتکہ ۵۵::
ترجمہ۔ پرانوں کی رکشا کرنیوالا۔ دِنئے کرنے والا۔
ساکشی روپ۔ سُکھ بہوکتا۔ اپرمان پراکرم والا۔
سمُدر روپ۔ انت رہت آتما۔ چھیر ساگر میں شین
کرنے والا۔ یمراج روپ بھگوان کو پرنام ہے ۵۵

اَجو مہارہہ سوابہاویو جتامِترہ
پرمودنہ :: آنندو نندنو نندہ ستیہ
دہرم ترِبکرمہہ :: ۵۶ ::

ترجمہ۔ اجنما۔ بہومُولیہ۔ سویم پرکاش۔ شتروں
کو جیتنے والا۔ مہان آنند۔ پُتر روپ۔ سدا
انند سُکھ روپ۔ پُتر روپ۔ ستیہ دھرم والا
بامن روپ۔ بھگوان کو نمسکار ہے :: ۵۶ ::

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

महर्षिकपिलाचार्यः कृतज्ञो
मेदनीपतिः। त्रिपदस्त्रिदशा
ध्यक्षोमहाशृंगः कृतांतकृत्॥
अर्थ – महर्षि वसिष्ठ विश्वामित्रादि
रूप·कपिलमुनिके अवतार·करे हुए
को माननेवाला·पृथिवीकास्वामी·
कर्मउपासना ज्ञानरूप·देवताओंका
स्वामी·सुमेरु रूप·जमराज का भी
नाश करनेवाला जो ईश है उसको न-
मस्कार है॥५७॥

महावराहोगोविन्दः सुषेणः
कनकांगदी। गुह्योगंभीरोगह
नोगुप्तश्चक्रगदाधरः॥५८॥
अर्थ – वाराह अवतार·इन्द्रियोंको
जाननेवाला·सुषेणवैद्यरूप·सोनेके
बाजू पहरनेवाला·गुप्तरूप·अगाधरू
प·जिसकाभेद किसीकोनपाया·रक्षा
करनेवाला·चक्रऔरगदाको धारण
करनेवाले भगवानको नमस्कार है ५८

مہرشی کپلاچاریہ کرتگیو میدنی پتھہ ؛
ترپدستری دشادھکشو مہاشرنگھہ
کرتانت کرت ؛ ۵۷ ؛

ترجمہ- مہرشی وسشٹ بسوامتر روپ کپل منی کے
اوتار- کرے ہوئے کو ماننے والا- پرتھوی کا
سوامی- کرم اوپاسنا گیان روپ- دیوتاؤں کا سوامی
سمیر و روپ جمراج کا بھی ناش کرنے والا- جو
ایشور ہے اُس کو نمسکار ہے ؛ ۵۷ ؛

مہابراہو گوبندہ سکھینہ کنکام گدی ؛
گہیو گمبھیرو گہنو گپتش چکر گدا
دہرہ ؛ ۵۸ ؛

ترجمہ- باراہ اوتار- اندریوں کا جاننے والا سکھین
بید روپ- سونے کے بازو پہرنے والا گپت
روپ- اگادھ روپ- جس کا بھید کسی کو نہ پایا
رکشا کرنے والا- چکر اور گدا کو دھارن کرنے والے
بھگوان کو نمسکار ہے ؛ ۵۸ ؛

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

वेधास्स्वांगोऽजितःकृष्णोदृढः
संकर्षणोऽच्युतः।वरुणोवा
रुणोवृक्षःपुष्कराक्षोमहाम-
नाः॥५९॥

अर्थ – ब्रह्मारूप ·ब्रह्मरूप जानने-
वाला ·जीतनेमें न आवे ·कृष्ण भगवान
·दृढ़रूप ·श्रीवलदेवजीका अवतार·
अच्युतरूप ·वरुणदेवतारूप ·जल-
रूप ·वृक्षरूप ·कमलनयन ·बड़ेमन
वाले ईशको प्रणाम है ॥५९॥

भगवानभगहानन्दीवनमाली
हलायुधः।आदित्योज्योतिरा
दित्यःसहिष्णुर्गतिसत्तमः ६०

अर्थ – ऐश्वर्य षटवाला ·कहोंऐ
श्वर्योंका न माननेवाला ·समृद्धिरू
प ·पुष्पमालाधारी ·हलधररूप ·सूर्य
रूप ·प्रकाशरूपीसूर्य ·सहनेवाला·
श्रेष्ठगतिवाले ·ऐसे भगवानको न
मस्कार करते भये ॥६०॥

ویدہاسوانگو جِتھہ کرِشنو درِڈھہ سنکر
شنو چُتھہ :: ورُنو وارُنو برِکشھہ
پُشکراکشو مہامناہ :: ۵۹ ::

ترجمہ - برِہما روپ - برہمہ روپ جاننے والا -
جیتنے میں نہ آوے - کرشن بھگوان - درڑھہ روپ -
بلدیوجی کا اوتار - اَچُت روپ - ورُن دیوتا
روپ - جل روپ - برِکش روپ - کمل نین
بڑے من والے ایشور کو نمسکار ہے :: ۵۹ ::

بھگوان بھگھانندی بن مالی
ہلایُدہ :: آدِتیو جوترادِتیہ
سہشنُر گت ستمھہ :: ۶۰ ::

ترجمہ - ایشریہ کھٹ والا چھوؤں ایشوریوں کا
نہ ماننے والا - سمرِدھ روپ پُشپ مالادھاری -
ہلدہر روپ - سوریہ روپ - پرکاش روپی سوریہ
سہنے والا - سریشٹھ گتی والے بھگوان کو
نمسکار ہے :: ۶۰ ::

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

सुधन्वाखण्डपरशुर्दारुणो द्रविणप्रदः। दिवस्पृक्सर्वदृग्व्यासो वाचस्पतिरयोनिजः॥६१॥

अर्थ - सुन्दर है धनुष जिसका· नष्ट किया है तेज परशुरामजी का जिसने· कठिनरूप· धनका देनेवाला· स्वर्ग को स्पर्श करनेवाला· सबका देखनेवाला· व्यासजी का अवतार· बृहस्पतिरूप· योनी से उत्पन्न नहीं होनेवाले परमेश्वर को प्रणाम है॥६१॥

त्रिसामा सामगः साम निर्वाणं भेषजं भिषक्। सन्यासकृच्छमः शांतो निष्ठा शान्तिः परायणः॥

अर्थ - तीसरा सामवेदरूप· सामवेद का गानेवाला· सामवेदरूप· निर्वाणमोक्षरूप· औषधीरूप· वैद्यरूप· धन्वंतरी के अवतार· सन्यासरूप धारण करनेवाला· मनको रोकनेवाला· शांतिरूप· शांति में लगा हुआ· सबसे परे है स्थान जिसका ऐसे भगवान को प्रणाम है॥६२॥

سُدہنوا کھنڈ پرشُر دارُنو درِونہ پردہ ؞

دوسپرکِ سرب درگو یاسو واچسپتی

ربوجھہ ؞ ٦١ ؞

ترجمہ۔ سُندر ہے دہنش جسکا نشٹ کیا ہے تیج پرشُرام جی کا جسنے۔ کٹھن روپ۔ دہن کا دینے والا۔ سُرگ کو اسپرش کرنیوالا۔ سب کا دیکھنے والا۔ بیاس جی کا اوتار۔ برہسپتی روپ۔ یونی سے نہیں اوتپن ہونے والے ایشور کو پرنام ہے ؞ ٦١ ؞

ترِسا ماسا گھہ سا مارِ بانم بہِیکھہ جم

بہِکھک ؞ سنّیا ساکرِچھمہ شانتو

نِشٹا شانتِھہ پرایںہ ؞ ٦٢ ؞

ترجمہ۔ تیسرا سام وید روپ۔ سام وید کا گانیوالا سام وید روپ۔ نِربان موکش روپ۔ اوشدہی روپ۔ بَید روپ۔ دہنونتری کے اوتار۔ سنّیاس روپ دھارن کرنیوالا۔ من کو روکنے والا۔ شانتی روپ شانتی میں لگا ہوا۔ سب سے پرے ہے استھان جسکا۔ ایسے بھگوان کو پرنام ہے ؞ ٦٢ ؞

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

शुभांगः शान्तिदः स्रष्टा कुमुदः कुवलेशयः। गोहितो गोपति गोप्ता वृषभाक्षो वृषप्रियः ६३	شُبھانگھہ شانت دہ سرِشٹہا کُمُدہ کُبلیشیہ؛ گوہتو گوپتر گوپتا برکھہ بہاکشو برکھپ پریہ ؛ ۶۳ ؛
अर्थ -सुंदर है अंग जिसका · शांतिका देनेवाला · ब्रह्मारूप · चन्द्रमारूप · बद्रिकाश्रम में शयन करनेवाला · गउओंका हितकारी · इन्द्रियोंका स्वामी · रक्षाकरनेवाला · दिव्यचक्षु · धर्मके प्यारे · भगवानको नमस्कार है ॥६३॥	ترجمہ۔ سُندر ہے انگ جسکا۔ شانتی کا دینے والا۔ برہما روپ چندرما روپ۔ بدرکاشرم میں شین کرنیوالا۔ گوؤں کا ہت کاری۔ اِندریوں کا سوامی۔ رکشا کرنے والا۔ دِبیہ چکشو۔ دہرم کے پیارے بھگوان کو نمسکار ہے ؛ ۶۳ ؛
अनिवर्ती निवृत्तात्मा संक्षेप्ता क्षेमकृच्छिवः। श्रीवत्सवक्षाः श्रीवासः श्रीपतिः श्रीमतांवरः ॥६४॥	اَنبرتی نبرتاتما سنکشیپتا کشیم کرچھوہ؛ شری وتش وکشاہ شری واسہ شری پتہ شری متام برہ ؛ ۶۴ ؛
अर्थ -दुष्टोंको मारनेसे नहटनेवाला · सबसे न्यारा फेंकनवाला · कुशल करनेवाला · शिवस्वरूप · भृगुलताका चिन्ह है छातीमें जिसके · लक्ष्मीजी है हृदयमें जिसके · लक्ष्मीका स्वामी · लक्ष्मीवानोंसे श्रेष्ठ परमेश्वरको प्रणाम ॥ ६४ ॥	ترجمہ۔ دُشٹوں کو مارنے سے نہ ہٹنے والا سب سے نیارا پھینکنے والا کُشل کرنیوالا شیو سروپ بھرگُ لتا کا چِنھ ہے چھاتی میں جسکے۔ لکشمی جی ہے ہردے میں جسکے۔ لکشمی کا سوامی لکشمی وانوں میں سریشٹھ پرمیشور کو پرنام ہے ۶۴

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

श्रीदः श्रीशः श्रीनिवासः श्रीनिधिः श्रीविभावनः। श्रीधरः श्रीकरः श्रेयः श्रीमाल्लोकत्रयाश्रयः ६५

अर्थ – लक्ष्मीका देनेवाला · लक्ष्मीका ईश · लक्ष्मीका स्थानरूप · लक्ष्मीका निधि · लक्ष्मीका प्यारा · लक्ष्मीको धारणकरनेवाला · शोभाका धारण करनेवाला · शोभाका करनेवाला · कल्याणरूप · शोभाहै विद्यमान जिसके · तीनों लोकोंका सहारारूप परमेश्वरको प्रणाम है ॥ ६५ ॥

स्वक्षः स्वंगः शतानन्दो नन्दिर्ज्योतिर्गणेश्वरः। विजितात्माविधेयात्मासत्कीर्त्तिश्छिन्नसंशयः ॥ ६६ ॥

अर्थ – सुंदर हैं इन्द्रियां जिसकी · सुंदर है अंग जिसका · तीनों कालमें रहनेवाला · सुस्वरूप · समृद्धिरूप · प्रकाशका स्वामी · सूर्यरूप · जीती है आत्मा जिसने · विधिके योग्य है आत्मा जिसकी · श्रेष्ठ है कीर्त्ति जिसकी · संदेहरहित भगवानको प्रणाम है ॥ ६६ ॥

شری دہ شری شہ شری نوسہ شری ندہ شری بہاونہ : شری دہرہ شری کرہ شریہ شری مالم لوک تریہ شریہ ش ۶۵ :

ترجمہ۔ لکشمی کا دینے والا۔ لکشمی کا ایش۔ لکشمی کا استہان روپ۔ لکشمی کا ندہی۔ لکشمی کا پیارا۔ لکشمی کو دہارن کرنے والا۔ شوبہا کا دہارن کرنیوالا۔ شوبہا کا کرنیوالا۔ کلیان روپ۔ شوبہا ہے ودّیامان جسکے تینوں لوکوں کا سہارا روپ پرمیشور کو پرنام ہے ۶۵ :

سکشہ سنگہ شتانندو نندر جیوترگنیشور : ودہیاتما ستکیرتش چہن سنشیہ ۶۶ :

ترجمہ۔ سندر ہیں اندریاں جسکی۔ سندر ہے انگ جسکا تینوں کال میں رہنے والا۔ سسوروپ سمردہی روپ۔ پرکاش کا سوامی۔ سوریہ روپ جیتی ہے آتما جسنے۔ بدہی کے یوگیہ ہے آتما جسکی شریشٹھ ہے کیرتی جسکی۔ سندیہ رہت بھگوان کو پرنام ۶۶ :

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

उदीर्णः सर्वतश्चक्षुरनीशः शा-
श्वतस्थिरः। भूशयो भूषणो भूति
र्विशोकः शोकनाशनः ॥ ६७॥

अर्थ – उदीर्णरूप · चारों ओर हैं नेत्र जिसके · ईश ही नहीं हैं कोई जिसका · निरंतर ठहरनेवाला · पृथिवी में सोनेवाला · गहनारूप · संपतिरूप · शोकरहित · शोक को नाश करनेवाले परमेश्वर को प्रणाम है ॥ ६७॥

अर्चिष्मानर्चितः कुंभो विशुद्धा
त्मा विशोधनः। अनिरुद्धोऽप्रति
रथः प्रद्युम्नोऽमितविक्रमः ६८

अर्थ – अग्निशिखारूप · पूजित घटरूप · मलरहित · शुद्ध करनेवाला · अनिरुद्ध का अवतार · जिसकी तुल्य कोई नहीं · कामदेव का अवतार · अप्रमाण है पराक्रम जिसका · ऐसे परमात्मा को नमस्कार है ॥ ६८॥ ॥ ६८॥

॥ ध॥ ॥ ध॥ ॥ ध॥ ॥ ध॥ ॥ ध॥

اُدِیرنہ سرب تشچکشُر نیشہ شاشو
تستھرہ ٪ بھوشیو بھوشنو بھوتر
شوکھہ شوک ناشنہ ٪ ۶۷ ٪

ترجمہ۔ اُدیرن روپ۔ چاروں اور ہیں نیتر جسکے۔ ایش ہی نہیں ہے کوئی جسکا۔ نرنتر ٹھرنے والا۔ پرتھوی میں سونے والا گہنا روپ۔ سنپتی روپ۔ شوک رہت۔ شوک کو ناش کرنیوالے پرمیشور کو پرنام ۶۷

آرچِشمانرچِتہ کُنبھو وِشُدّھاتماو شودہنہ ٪
انرُوّدّھو پرتِ رتھہ پردّمنو مِتِ
وِکرمھ ٪ ۶۸ ٪

ترجمہ۔ اگنی شکھا روپ۔ پوجت گھٹ روپ۔ مل رہت۔ شُدّھ کرنے والا۔ انرُدّھ کا اوتار۔ جس کی تولیہ کوئی نہیں۔ کام دیو اوتار۔ اپرمان ہے پراکرم جس کا۔ ایسے پرماتما کو نمسکار ہے ٪ ۶۸ ٪

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

कालनेमिनिहावीरः शौरिः शूर
जनेश्वरः। त्रिलोकात्मात्रिलो
केशः केशवः केशिहाहरिः ६९
अर्थ – कालनेमिराक्षसको मारनेवा
ले · शूरवीर · वसुदेवरूप · शूरवीररा-
जारूप · तीनोंलोकोंका आत्मा · तीनों
लोकोंका स्वामी · जलशायी · केशीना
म दानवका मारनेवाला · हरी भगवा
न पापोंके हरनेवालेको प्रणाम है ६९

कामदेवः कामपालः कामीका-
न्तः कृतागमः। अनिर्देश्यवपु
विष्णुर्वीरोऽनन्तो धनंजयः ७०
अर्थ – कामदेवरूप · कामके पाल-
नेवाले · अल्पबुद्धियोंकी दृष्टिमें का-
मीरूप · मनोहर किये हैं वेदादिशा-
स्त्र जिसने · किसीकी आज्ञामें नहीं ऐ
सा शरीरव्यापक · वीरभक्तरूप · अंतर
हित · अग्निवाअर्जुनरूप · ऐसे भग
वान को नमस्कार है ॥७०॥

کال نیمی مہابیرہ شورہ شورجنیشورہ
ترلوکاتما ترلوکیشھہ کیشوہ کیشہاہرہ ۶۹
ترجمہ۔کال نیمی راکشس کو مارنیوالا شور بیر۔بسدیو روپ۔
شور بیر راجا روپ۔تینوں لوکوں کا آتما تینوں لوکونکا
سوامی۔جل شائی۔کیشی نام دانو کا مارنے والا۔
ہری بھگوان پاپوں کے ہرنیوالے کو پرنام ہے ۶۹

کام دیوہ کام پالھہ کامی کانتھہ کرتا
گمھہ ۞ انردیشیہ وپر وشنو بیرو
ننتو دہننجیھہ ۞ ۷۰ ۞
ترجمہ۔کام دیو روپ۔کام کو پالنے والا۔الپ
بدھیوں کی درشٹی میں کامی روپ۔منوہر
کیے ہیں وید ادِ۔شاستر جنے۔کسی کی
آگیاں میں نہیں ایسا شریر بیاپک۔بیر
بھکت روپ۔انت رہت۔اگنی وا ارجن
روپ۔بھگوان کو نمسکار ہے ۞ ۷۰ ۞

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

ब्रह्मण्यो ब्रह्मकृद्ब्रह्मा ब्रह्म ब्र-
ह्मविवर्द्धनः। ब्रह्मविद्ब्राह्मणो
ब्रह्मी ब्रह्मज्ञो ब्राह्मणप्रियः ७१

अर्थ-दयालुरूप·जीवात्माकोपर
मात्मारूपकरनेवाला·उत्पत्तीकरनेवा
ला·जिससेप्रजाउत्पन्नहो·यावेदध
र्मकाबढ़ानेवाला·वेदकोजाननेवा-
ला·ब्राह्मणरूप·स्वयंब्रह्मरूप·अप
नेस्वरूपकोजाननेवाला·ब्राह्मणोंके
प्यारे·ऐसेभगवानकोप्रणामहै ७१

महाक्रमो महाकर्मा महातेजा
महोरगः। महाक्रतुर्महाय-
ज्वा महायज्ञो महाहविः॥७२

अर्थ-बड़ीरतिवाला·बड़ाकर्मरूप
बड़ातेजस्वी·शेषनागरूप·बड़ा-
यज्ञरूप·बड़ायज्ञकरानेवाला·अ
श्वमेधयज्ञरूप·बड़ीहविघृतादि
यज्ञकीसामग्रीरूप·ऐसेईश्वरको
प्रणामहै॥७२॥

برہمنیو برہم کرد برہما برہم برہم بردہنہ:
برہم ود براہمنو برہمی برہمگیو
براہمن پریہ : ۷۱ :

ترجمہ۔ دیالو روپ۔ جیو آتما کو پرماتما روپ کرنے والا
اوتپتی کرنے والا۔ جس سے پرجا اوتپن ہو۔ یا
وید دہرم کا بڑھانے والا۔ وید کو جاننے والا۔
براہمن روپ۔ سویم برہم روپ۔ اپنے سروپ
کو جاننے والا۔ براہمنوں کے پیارے بھگوان
کو پرنام ہے : ۷۱ :

مہا کرمو مہا کرما مہا تیجو مہورگہ:
مہا کرتر مہا یجوا مہا یگیو مہا ہوہ: ۷۲:

ترجمہ۔ بڑی رتی والا۔ بڑا کرم روپ۔ بڑا تیجوی۔
شیش ناگ روپ۔ بڑا یگیہ روپ۔ بڑا یگیہ
کرانے والا۔ اشومیدہ یگیہ روپ۔ بڑی ہوی
گھرتادِ یگیہ کی سامگری روپ۔ ایشور کو
ہے : ۷۲ :

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

स्तव्यः स्तवप्रियः स्तोत्रं स्तुतिः
स्तोतारणप्रियः। पूर्णः पूरयि
तापुण्यः पुण्यकीर्त्तिरनामयः
॥७३॥

अर्थ–स्तुतिकरनेकेयोग्य·स्तवन
हैप्यारा जिसको·स्तोत्ररूप·स्तुतिरू
प·स्तोत्रहैरूपजिसका·संग्रामहैप्या
राजिसको·पूर्णरूप·पूराकरनेवाला
धर्मरूप·पवित्रकीर्त्ति·रोगरहित·से
से परमेश्वरकोप्रणाम है॥७३॥

मनोजवस्तीर्थकरोवसुरेता
वसुप्रदः। वसुप्रदोवासुदेवो
वसुर्वसुमनाहविः॥७४॥

अर्थ–मनकावेगरूप·तीर्थोंकाक
[illegible]नेवाला·धनरूपीवीर्य्यवाला·धन
[illegible] देवतारूपीपुत्रदे
नेवाला·वसुदेवके [illegible] वसुधन
रूप·धनमेंमनरखनेवाला·[illegible]
पभगवानकोप्रणामहै॥७४॥

استَوَیہ استَو پِرَیہ استوترم اِستُتِھ
استاتارنپِرَیہ ؛ پُورنہ پُورَیتا پُنیَھ
پُنیہ کیرتی رنامیہ ؛ ۷۳ ؛

ترجمہ۔ اِستُتی کرنے کے یوگ۔ استون ہے پیارا
جسکو۔ اِستوتر روپ۔ اِستُتی روپ۔ اِستوتر
ہے روپ جس کا۔ سنگرام ہے پیارا جسکو۔
پُورن روپ پُورا کرنے والا۔ دھرم روپ۔ پوِتر کیرتی۔
روگ رہت پرمیشور کو پرنام ہے ؛ ۷۳ ؛

منوجوس تیرتھہ کرو وسُریتا وَسُو
پرَیہ ؛ وَسُو پردو واسُدیو وَ
وَسُرو سُومنا ہوِہ ؛ ۷۴ ؛

ترجمہ۔ من کا بیگ روپ۔ تیرتھوں کا کرنیوالا۔
دھن روپی بیریہ دان۔ دھن کا دینے والا۔
وسُدیوتا روپی پُتر دینے والا۔ وسُدیو کا پُتر۔
دسو دھن روپ۔ دھن میں من رکھنے والا۔
ہوی روپ بھگوان کو پرنام ہے ؛ ۷۴ ؛

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

सद्गतिः सत्कृतिः सत्तासद्भूतिः
सत्परायणः। शूरसेनो यदु-
श्रेष्ठः सन्निवासः सुयामनः॥७५॥

अर्थ - श्रेष्ठगतिवाला · सत्य करने वाला · सत्तारूप · सच्ची विभूतिवाला सत्य में लगा हुआ · शूरसेन रूप · यदुवंश में श्रेष्ठ · जहाँ सत्य हो वहाँ रहने वाला · सुंदर यमुना जल रूप · ऐसे भगवान को नमस्कार है॥७५॥

سدگتھ ست کرتہ ستّا سد بہوتہ
ست پرایئہ: شورسینو یدو سرشٹھ
سن نواسحہ سیامنحہ ۷۵

ترجمہ ۔ سرشٹھ گتی والا ستیہ کرنے والا ستّا روپ ۔ سچی بہوتی والا ستیہ میں لگا ہوا ۔ شورسین روپ ۔ یدو ونش میں سرشٹھ ۔ جہاں ستیہ ہو وہاں رہنے والا سندر جمنا جل روپ بھگوان کو پرنام ہے ۷۵

भूतावासो वासुदेवः सर्वासु
निलयोऽनलः। दर्पहा दर्पदो
दृप्तो दुर्धरोऽथापराजितः॥७६॥

अर्थ - जीवों में रहनेवाला · वासुदेव रूप · सब जीवों का स्थान · अग्नि रूप · अभिमान का नाशक · अभिमान का देनेवाला · गर्वरूप · बड़ी कठिनता से प्राप्त होनेवाला · औरों से नहीं जीता जाय ऐसे भगवान को प्रणाम है॥७६॥ ॥६॥ ॥६॥ ॥६॥

بہوتا واسو واسدیوہ سرباسن
لیونلحہ: درپہا درپ دو درپتو در
دہرو تھاپراجتھ ۷۶

ترجمہ ... میں رہنے والا ۔ واسدیو روپ ۔ ... اگنی روپ ۔ ابھمان کا ناشک ابھمان کا دینے والا ۔ گرب ... کٹھنتا سے پراپت ہونیوالا ۔ وروں سے نہیں جیتا جا ... ایسے بھگوان کو پرنام ہے ۷۶

विश्वमूर्तिर्महामूर्तिर्दीप्तमू-
र्तिरमूर्तिमान् ।अनेकमूर्ति
रव्यक्तःशतमूर्तिशताननः
॥७७॥

अर्थ – संसारमूर्त्ति·विराटमूर्त्ति·प्रकाशमूर्त्ति·अमूर्तिस्वरूप·अनेक मूर्त्ति अप्रगट·असंख्यमूर्त्ति·असंख्यमुख वाले·परमेश्वर को प्रणाम है ॥७७॥

एकोनैकः सवः कः किंयत्त
त्पदमनुत्तमं ।लोकबन्धुर्लो
कनाथोमाधवोभक्तवत्सलः
॥७८॥

अर्थ – एकब्रह्मरूप·अनेकअवताररूप·बहुरूप·ब्रह्मारूप·क्यारूप·जिसकारूप·उसकारूप·चरणरूप·सबसे उत्तम संसारका बंधु संसारकास्वामी·मायाकाभ्रमानेवाला·भक्तोंपर दयाकरनेवाला·ऐसे परमेश्वर को प्रणाम है ॥७८॥

بشوموُرتر مہاموُرتر دیپت مُورتی
رمُورتِ مان :: انیک مورتِ
ربکتھ شت مُورتی شتانَنھ :: ۷۷ ::

ترجمہ۔ سنسار مُورتی۔ براٹ مورتی۔ پرکاش مُورتی۔ امُورتی روپ۔ انیک مُورتی۔ اپرگٹ۔ اسنکھیہ مُورتی۔ اسنکھیہ مکھ والے کو پرمیشور کو پرنام ہے :: ۷۷ ::

ایکو نیکھ سوہ کہہ کم یتّت پد منُتّم ::
لوک بندھر لوک ناتھو مادھوو
بھکت وتسلھ :: ۷۸ ::

ترجمہ۔ ایک برھم روپ۔ انیک اوتار روپ۔ بہو روپ۔ برہما روپ۔ کیا روپ۔ جسکا روپ۔ اُسکا روپ۔ چرن روپ۔ سب سے اُتّم۔ سنسار کا بندھو۔ سنسار کا سوامی۔ مایا کا بھرمانے والا۔ بھگتوں پر دیا کرنے والے۔ بھگوان کو پرنام ہے :: ۷۸ ::

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

सुवर्णवर्णो हेमांगो वरांगश्चंद
नांगदी। वीरहा विषमः शून्यो
घृताशीर चलश्चलः॥ ७९॥

अर्थ – पीत है रंग जिनका सोने का
सा॰ सोने का सा अंग जिसका॰ श्रेष्ट है
अंग जिसका॰ हरी चंदन और बाजू धा
रण किये हुए॰ शूर वीर को मारने वाले
विषम रूप॰ आकाश की नाई व्यापक
धारण किया है जगत का अभिप्राय जि
सने॰ अचल रूप॰ और अचल रूपण रू
प॰ ऐसे ईश्वर को प्रणाम है॥ ७९॥

अमानी मानदो मान्यो लोक स्वा
मी त्रिलोक धृक्। सुमेधा मेध
जो धन्यः सत्यमेधा धराधरः॥ ८०॥

अर्थ – मान रहित॰ मान का देने वाला॰
पुज्य रूप॰ लोकों का स्वामी॰ तीनों लो-
कों को धारण करने वाला॰ सुंदर बुद्धी-
वाला॰ बुद्धि से जीत॰ धन्य रूप॰ सत्य बु
द्धि वाला॰ शेष रूप॰ पृथिवी को धारण
करने वाले परमात्मा को नमस्कार है॥ ८०

سُبرن برنو ہیمانگو برانگش چند نام
گدی ؛؛ بیرہا بکھمہ سُونّیو دھرتاشیر
چلشچلھہ ؛؛ ۷۹ ؛؛

ترجمہ۔ پیت ہے رنگ جِسکا سونے کا سا سونے کا سا
انگ جسکا۔ سریشٹھ ہے انگ جسکا۔ ہری چندن اور
بازو دھارن کئے ہوئے۔ شُور بیر کو مارنے والا۔ بکھم
روپ۔ آکاش کی نائیں بیاپک۔ دھارن کیا ہے
جگت کا ابھپرائے جسنے۔ اچل روپ۔ اور اچل
روپن روپ ایشور کو پرنام ہے ؛؛ ۷۹ ؛؛

اَمانی مانَدو مانّیو لوک سوامی تِرلوک
دِھرک ؛؛ سُمیدَ ہا میدہ جو دھنّیہ
ستّیہ میدَ ہا دھرہ دھرہ ؛؛ ۸۰ ؛؛

ترجمہ۔ مان رہت۔ مان کا دینے والا۔ پوجیہ روپ۔
لوگوں کا سوامی۔ تینوں لوگوں کا دھارن کرنیوالا۔ سُندر
بُدّھی والا۔ بُدّھی لجیت۔ دھنیہ روپ۔ ست بُدّھی
والا۔ شیش روپ۔ پرتھوی کو دھارن کرنیوالے کو ایشور
کو پرنام ہے ؛؛ ۸۰ ؛؛

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

तेजोवृषोद्युतिधरः सर्वशस्त्र
भृतांवरः। प्रग्रहो निग्रहोव्य
ग्रोनैकशृंगोगदाग्रजः॥८१॥

अर्थ – तेजस्वी·धर्मरूप·प्रकाशका धारण करने वाला·सव शस्त्र धारियों में श्रेष्ठ·मनरूप·रोकनेवाला·व्यग्र रूप·अनेक प्रकारसे वड़ा·गदा धारियों में प्रथमरूप·परमेश्वरको प्रणाम ८१

चतुर्मूर्तिश्चतुर्वाहुश्चतुर्व्यू-
हश्चतुर्गतिः। चतुरात्माचतु
र्भावश्चतुर्वेदविदेकपात् ८२

अर्थ – चारोंभाई राम लक्ष्मण भरत शत्रुघ्नरूप·चारहाथवाला·असवार पैदल हाथी रथ आदि चार प्रकारकी सेना का व्यूह रचनेवाला·अर्थ धर्मकाम मोक्ष इन चारोंका देनेवाला·मन वुद्धि चित्त अहंकारका आत्मा चार जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति तुरियारूप चारों वेदों का जाननेवाला·एक पादे ब्रह्मरूप भगवान् को नमस्कार है॥८२॥

تیجو برکھو دُتِ دہرہ سرب شستر
بھرتامبرہ ؛ پرگرہو نگرہو بگرو
نیک شرنگا گدا گرجھ ؛ ۸۱ ؛

ترجمہ۔ تیجوی۔ دہرم روپ۔ پرکاش کا دہارن کرنیوالا سب شستر دہاریوں میں سریشٹھ۔ من روپ۔ روکنے والا۔ بگر روپ۔ انیک پرکار سے بڑا۔ گدا دہاریوں میں پرتھم روپ۔ پرمیشور کو پرنام ہے ؛ ۸۱

چتر مورتش چتر باہو شچتر بیوہا شچتر
گتھ ؛ چترا تما چتر بہاو شچتر وید
ودیک پات ؛ ۸۲ ؛

ترجمہ۔ چاروں بھائی رام لچھمن۔ بہرت شترگہن کا روپ چار ہاتھ والا۔ اسوار۔ پیدل۔ ہاتھی۔ رتھ۔ آدچار پرکار کی سینا کا بیوہ رچنے والا یعنی قلعہ ارتھ۔ دہرم۔ کام۔ موکش۔ ان چاروں کا دینے والا۔ من۔ بدھی۔ چت۔ اہنکار۔ کا آتما جاگرت۔ سپن۔ سکھپتی۔ تریا۔ ان چاروں کا روپ چاروں ویدوں کا جاننے والا۔ ایک پاد برہم روپ بھگوان کو پرنام ؛ ۸۲ ؛ ۸۲ ؛

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

समावर्त्तो निवृत्तात्मा दुर्जयो दु-
रतिक्रमः । दुर्लभो दुर्गमो दुर्गो
दुरावासो दुरारिहः ॥ ८३ ॥

अर्थ – समावर्त्तनरूप · सब इन्द्रियों
से परे · कठिनता से जीता जाय · दुष्टों का
उलंघन करनेवाला · कठिनता से प्राप्त
होनेवाला · कठिनरूप · गढ़रूप · कठिन
ता से हृदय में आनेवाला · दुष्ट शत्रुओं
के नाश करने वाले भगवान को प्रणाम
दंडवत है ॥ ८३ ॥ ॥छ॥ ॥छ॥ ॥छ॥

शुभांगो लोकसारंगः सुतंतुस्त-
न्तुवर्द्धनः । इन्द्रकर्मा महाकर्मा
कृतकर्मा कृतागमः ॥ ८४ ॥

अर्थ – सुंदर है अंग जिसका · संसार
प्रिय · श्रेष्ठ तंतु वाला · कुल वृद्धि करने
वाला · इन्द्र का कामरूप · बड़ा कामरू
प · किया है कर्म उत्पन्न जिसने · किये
हैं आगम शास्त्र जिसने · ऐसे भगवान्
को नमस्कार करते भये ॥ ८४ ॥

سماورتو نورتاتما درجیو درتی کرمہ ::
درلبھو درگمو درگو دراباسو دراریہا :: ۸۳ ::

ترجمہ۔ سماورتن روپ۔ سب اندریوں سے پرے۔
کٹھنتا سے جیتا جائے۔ دشٹوں کا اولنگھن کرنیوالا۔
کٹھنتا سے پراپت ہونیوالا کٹھن روپ۔ گڑھ روپ۔
کٹھنتا سے ہردے میں آنیوالا۔ دشٹ شتروں کے
ناش کرنیوالے بھگوان کو پرنام :: ۸۳ ::

شبھانگو لوک سارنگھہ ستنتم
تنتم تبردھنہ :: اندرکرما مہا
کرما کرت کرما کرتاگمہ :: ۸۴ ::

ترجمہ۔ سندر ہے انگ جسکا۔ سنسار پریہ۔ شریشٹھ
تنت والا۔ کل بردھی کرنے والا۔ اندر کا کام روپ
بڑا کام روپ۔ کیا ہے کام اوتپن جس نے
کئے ہیں آگم۔ شاستر جسنے ایسے بھگوان کو
نمسکار ہے :: ۸۴ :: ۸۴ ::

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

उद्भवःसुन्दरःसुन्दोरत्ननाभःसु
लोचनः।अर्कोवाजसनःशृंगी
जयन्तःसर्वविज्जयी॥८५॥

अर्थ–उत्पत्तीरूप-मनोहरसुंदररूप-रत्नहैनाभिमेंजिसके-सुंदरनेत्रवाले-सूर्य्यरूप-चन्द्ररूप-सबमेंऊंचा-इन्द्रकापुत्ररूप-सर्वोकाजाननेवाला-सबकोजीतनेवाले-जोहैउसको प्रणामहै॥८५॥

सुवर्णबिन्दुरक्षोभ्यःसर्ववा
गीश्वरेश्वरः।महाह्रदोमहा
गर्तोमहाभूतोमहानिधिः८६

अर्थ–सुवर्णहैबीजजिसका-क्रोधरहित-सर्ववाणियोंकोईश्वरोंकाईश्वर-अर्थात्स्वामी-पुष्करतीर्थरूप-समुद्ररूप-पंचतत्त्वरूप-कुवेरदेवतारूप-ऐसेभगवानकोनमस्कार दंडवतकरतेभये॥८६॥

اُدبھوہ سُندرہ سُندُو رتن نابھہ
سُلوچنہ :: ارکو باج سنھ شرنگی
جینتھ سرب وِجّی :: ۸۵ ::

ترجمہ۔ اوتپتّی روپ۔ منوہر سُندر روپ۔ رتن ہے نابھہ میں جسکے۔ سُندر نیتروں والا۔ سُوریہ روپ۔ چندر روپ۔ سب میں اُونچا۔ اِندر کا پُتر روپ۔ سبھوں کا جاننے والا۔ سب کو جیتنے والا۔ جو ہے اُس کو نمسکار ہے :: ۸۵ ::

سُبرن بندُو رکشوبھیہ سرب باگیشو
ریشورہ :: مہاہردو مہاگرتو مہا
بھوتو مہانِدھہ :: ۸۶ ::

ترجمہ۔ سبرن ہے بیج جسکا۔ کرودھ رہت۔ سرب بانیوں کو ایشوروں کا ایشور ارتھات سوامی۔ پُشکر تیرتھ روپ۔ سمُدر روپ۔ پنچ تتو روپ۔ کُبیر دیوتا روپ۔ بھگوان کو نمسکار ہے :: ۸۶ ::

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

कुमुदः कुन्दरः कुन्दः पर्जन्यः
पावनोनिलः । अमृतांशोऽमृ
तवपुः सर्वज्ञः सर्वतोमुखः ८७

अर्थ – कमलरूप · पृथिवीके विदा-
रणकरनेवाले · पृथिवीको देनेवाले ·
वाराहअवतार · मेघरूप · पवित्रकर
नेवाले · पवनरूप · चन्द्रमारूप · मो
क्षरूप · सबको जाननेवाले · चारों -
ओर है मुख जिनके ऐसे ईश्वरको प्र
णाम है ॥ ८७ ॥

सुलभः सुव्रतः सिद्धः शत्रुजि
च्छत्रुतापनः । न्यग्रोधोदुंव
रोश्वत्थश्चाणुरांध्रिनिषूदनः

अर्थ – सदासवस्थानमें व्याप्त होनेवा
ले · श्रेष्ठनियमवाले · सिद्धकपिलमुनी
रूप · शत्रुओंकाजीतनेवाला · शत्रुओं
कोतपानेवाला · वटवृक्षरूप · गूलरवृ
क्षरूप · पीपलवृक्षरूप · परोपकारी ·
अपनेमीठे फलोंसे सबको तृप्तकरने
वाले · चाणूरनामराक्षसके पैरोंको तो
ड़नेवाले कृष्णरूपको प्रणाम है ॥ ८८ ॥

کُمُدہ کُندرہ کُندہ پرجنیھہ پاوَنونِلھہ ::
امرتام شومِرت وپُھ سربگیہ سرب
تومُکھہ :: ۸۷ ::

ترجمہ ۔ کمل روپ ۔ پرتھوی کو بدارن کرنیوالا ۔ پرتھوی کو
دینے والا ۔ باراہ اوتار ۔ میگھہ روپ ۔ پوتر کرنیوالا ۔
پون روپ ۔ چندرما روپ ۔ موکش روپ سب
کو جاننے والا ۔ چاروں اور ہے مکھہ جسکا ۔ ایسے
ایشر کو پرنام ہے :: ۸۷ ::

سُلبھہ سُبرتہ سِدّہ ۔ شترجِچھتر تاپنہ ::
نگرودھو دُمبرو شچتھیش جانُور
انگھرِ نشُودنہ :: ۸۸ ::

ترجمہ ۔ سدا سب استھان میں بیاپت ہونیوالا ۔ سرشٹھہ
نیم والا ۔ سِدّہ کپل منی روپ ۔ شترونکا جیتنے والا ۔
شتروں کو تپانے والا ۔ بٹ برکش روپ ۔ گولر برکش
روپ ۔ پروپکاری ۔ اپنے میٹھے پھلوں سے سب کو ترپت
کرنیوالا ۔ جانو نام راکشش کے پیروں کو توڑنے والے
کرشن روپ کو پرنام ہے :: ۸۸ ::

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

सहस्रार्चिःसप्तजिह्वःसप्तै-
धाःसप्तवाहनः।अमूर्तिरन
घोऽचिंत्योभयकृद्भयनाश-
नः॥८९॥

अर्थ – सहस्रकिरणोंवाले अग्निरू
प·सातोंलोकोंमेंव्याप्त·सातबाहन·सप्त
स्वरोंमेंव्यापक·मूर्तिरहित·निष्पाप·
जोचिंतनमेंनआसके·भयकाकरने
वाला·दुष्टोंकोभक्तोंकेभयकानाशक
जोहै उनकोप्रणामहै॥८९॥

अणुर्बृहत्कृशःस्थूलोगुणभृ
न्निर्गुणोमहान्।अधृतःस्व
धृतःस्वास्यःप्राग्वंशोवंश-
वर्द्धनः॥९०॥

अर्थ – छोटेरूपकोधारणकरनेवा-
ले·बड़ेरूपकोधारणकरनेवाले·दुब
ला·मोटारूपधारी·गुणोंकोधारणक
रनेहारा·निर्गुणगुणोंसेन्यारा·सबसे
बड़ेपरमेश्वरकोप्रणामहै॥९०॥

سہسرارچھ سپت جہبہ سپتیں دہاہ
سپت باہنہ :: اموُرتی رنگہو چنتیو
بھیے کرد بھیے ناشنہ :: ۸۹ ::

ترجمہ۔ سہسروں کرنوں والا۔ اگنی روپ۔ ساتوں
لوگوں میں بیاپت۔ سات باہن۔ سپت سروں
میں بیاپک۔ مورتی رہت۔ نشپاپ۔ جو چنتن
میں نہ آسکے۔ بھیے کا کرنے والا۔ دشٹوں کو بھگتوں
کے بھیے کا ناشک جو ہے اُسکو پرنام ہے ::۸۹::

انُبر برہت کرشستھولو گُن بھرنر
گنوں مہان :: ادہرتہ سُدہرتہ
سواسیھ پراگونشو ونش بردہنہ :: ۹۰ ::

ترجمہ۔ چھوٹے روپ کو دہارن کرنیوالا۔ بڑے روپ
کو دہارن کرنیوالا۔ دُبلا۔ موٹا روپ دہاری۔ گنوں کو
دہارن کرنے والا۔ ترگن گنوں سے نیارا۔
سب سے بڑے پرمیشور کو پرنام ہے ::۹۰::

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

भारभृत्कथितोयोगी योगीशः
सर्वकामदः ।आश्रमःश्रमणः
क्षामःसुपर्णोवायुवाहनः ९१
अर्थ – वृषभरूप · कहाहुआयोगी-
रूप · योगियोंकास्वामी · सबकामनाओं
के देनेवाला · चारआश्रमरूप · परिश्र
मरूप · दुर्बलरूप · गरुड़कारूप · चै
तन्यरूप · वायूसेपरेजोभगवान हैं
उनको नमस्कार है ॥९१॥

धनुर्धरोधनुर्वेदोदंडोदमयि-
तादमः ।अपराजितःसर्वसहो
नियंतानियमोयमः ॥९२॥
अर्थ – धनुषधारी · धनुर्वेदकेसूत्ररू
प · दुष्टोंकोदंडरूप · इन्द्रियोंकादमन
करनेवाला · चक्षुआदिइन्द्रियरूप ·
औरोंसे नहींजीताजाय · सबसहनेवा
ला · क्षमारूप · क्षमाकरनेवाला · नि-
यमरूप · यमरूप भगवान को प्रणा
म है ॥९२॥

بھار بھرت کتھتو یوگی یوگیشھ
سرب کامدہ ؛ آشرمھ شرمنھ
چھامھ سپرنو بایوباہنہ ؛ ۹۱ ؛

ترجمہ - برکھبھ روپ - کہا ہوا یوگی روپ - یوگیوں کا
سوامی سب کامناؤں کا دینے والا چار اشرم روپ
پرشرم روپ - دربل روپ - گروڑ روپ چیتنہ
روپ - بایو سے پرے جو بھگوان ہے اسکو پرنام ۹۱

دھنردھرو دھنرویدو دنڈو
دم پتہ دمھ ؛ اپراجتھ سرب
سہو نینتا نیمو یمھ ؛ ۹۲ ؛

ترجمہ - دھنش دھاری - دھنروید کے سوتر روپ -
دُشٹوں کو ڈنڈ روپ - اندریوں کا دمن کرنیوالا -
چکشو آدِ اندریہ روپ - اوروں سے نہیں جیتا
جائے - سب سہنے والا چھما روپ چھما کرنیوالا -
نیم روپ یم روپ بھگوان کو پرنام ہے ؛ ۹۲ ؛

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

सत्ववान्सात्त्विकःसत्यः स-
त्यधर्मपरायणः।अभिप्रायः
प्रियार्हेर्हः प्रियकृत्प्रीतिवर्द्ध
नः॥९३॥

अर्थ – सतोगुण है विद्यमान जिसमें सतोगुणरूप · सत्यस्वरूप · सत्यधर्म में लगा हुआ · प्रयोजनरूप · प्यारा पूजने के योग्य · पूजारूप · प्रियकार्य करने वाला · प्रीति के बढ़ानेवाले · परमेश्वर को प्रणाम है ॥९३॥

विहायसगतिर्ज्योतिः सुरुचि
र्हुतभुग्विभुः। रविर्विरोचनः
सूर्यः सविता रविलोचनः ९४

अर्थ – आकाश में है गमन जिसका प्रकाशरूप · सुंदररुचिवाला · आहुतियों के भोगनेवाला · संपतिरूप · सूर्य्यरूप · विशेषता से प्यारा · साक्षात्सूर्य · जग की उत्पत्ती करनेवाला · सूर्य है नेत्र जिसके · विराटरूप · ऐसे भगवान को वंदना है ॥९४॥

ستّوان ساتوکھ ستّیہ ستّیہ دہرم
پرایخہ ؞ ابھپرایہ پریارہو ہھ
پریہ کرت پریت بردہنہ ؞ ۹۳

ترجمہ ستوگن ہے بدماں جس کے ستوگن روپ۔ ستّیہ سروپ۔ ستّیہ دہرم میں لگا ہوا۔ پریوجن روپ۔ پیارا پوجنے کے یوگیہ۔ پوجا روپ۔ پریہ کاریہ کرنیوالا۔ پریت کے بڑھانے والے پرمیشور کو پرنام ہے ؞ ۹۳ ؞

بہائے سگتر جیوتہ سُرچرُ ہُت
بُہکبہھ ؞ رورورچنہ سوُریَہ
سبتا رب لوچنہ ؞ ۹۴ ؞

ترجمہ۔ اکاش میں ہے گمن جسکا۔ پرکاش روپ سُندر رُچ والا۔ آہوتیوں کا بھوگنے والا سنپت روپ سوریہ روپ۔ وشیشتا سے پیارا ساکشات سوریہ جگ کی اوتپتی کرنیوالا۔ سوریہ ہیں نیتر جسکے براٹ روپ کے ایسے بھگوان کو بندنا ہے ؞ ۹۴ ؞

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

अनन्तोहुतभुग्भोक्तासुखदो
नैकदोऽग्रजः।अनिर्विण्णःस- ९५
दामर्षीलोकाधिष्ठानमद्भुतः॥

अर्थ – नहीं है पार जिसका ·होमके भोगनेवाला ·भोगरूप ·सुखका देनेवाला·अनेकबार अवतारधारणकरनेवाला·सबसे पहले होनेवाला·निर्विण्णरूप लज्जा ·दुष्टोंके अर्थ क्रोधरूप·लोकोंका स्थितिरूप ·अद्भुत विचित्र भगवानको प्रणाम है ॥९५॥

सनात्सनातनतमः कपिलः
कपिरव्ययः। स्वस्तिदः स्वस्ति
कृत्स्वस्ति स्वस्तिभुक्स्वस्तिद-
क्षिणः॥९६॥

अर्थ – सदा होनेवाला ·बहुत ही पुराना·कपिन्द्र मुनिका अवतार ·हनुमानरूप·अविनाशी ·कल्याणका देनेवाला·कल्याणरूप ·कल्याणका करनेवाला·कल्याणका भोगनेवाला ·कल्याणरूपीदक्षिणा देनेवाले भगवानको प्रणाम है॥
॥९६॥

اننتو ہت بہگ بہوکتا سکھہ دو
نیک جوگرجہ ؛ انروٖنھہ سدا
مرشی لوک دہشٹان مدہتھہ ۹۵

ترجمہ نہیں ہے پار جسکا۔ ہوم کا بہوگنے والا۔ بہوگ روپ۔ سکھہ کا دینے والا۔ اینک بار اوتار دہارن کرنیوالا۔ سب سے پہلے ہونیوالا۔ نِروِن روپ۔ لجّا۔ دشٹوں کے ارتھہ کرودھہ روپ۔ لوکوں کا استھت روپ۔ ادبہوت بچتر بہگوان کو پرنام ہے ۹۵

سنات سناتنتمہ کپلہ کپ
ربیہ سست دہ ؛ سست کرت
سستی سست بہک سست دکشنہ ۹۶

ترجمہ۔ سدا ہونیوالا۔ بہت ہی پرانا۔ کپندر منی کا اوتار۔ ہنومان روپ۔ ابناشی۔ کلیاں کا دینے والا کلیان روپ۔ کلیاں کا کرنے والا۔ کلیاں کا بہوگنے والا۔ کلیاں روپی دکشنا دینے والے بہگوان کو پرنام ہے ؛ ۹۶ ؛

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

अरौद्रः कुंडली चक्री विक्रम्यू-
र्जितशासनः। शब्दातिगः श-
ब्दसहः शिशिरः शर्वरीकरः ९७

अर्थ - भयानकरूपसे रहित · सर्व
व्यापक · चक्र है शस्त्र जिसका · बल
वानरूप · खोटे पुरुषोंको दंड देने वाला
शब्द से परे · शब्दका सहने वाला · शिशि
रऋतुरूप · रात्रीके करने वाले परमे-
श्वर को प्रणाम है ॥९७॥

अक्रूरः पेशलो दक्षो दक्षिणः
क्षमिणांवरः। विद्वत्तमो वी
तभयः पुण्यश्रवणकीर्तनः।
॥९८॥

अर्थ - शांतरूप · कोमलरूप · चतु
रः महाचतुर · क्षमा करने वालों में श्रेष्ठ
बड़ा विद्वान · जाता रहा है भय जिस
का · पवित्र कीर्तन का सुनने वाला जो
ईश्वर है उसको नमस्कार प्रणाम क
रते भये ॥९८॥

ارودره کنڈلی چکری بکرم
یوجت شاسنه :: شدوا تگهه
شدوسهه ششره شربکره - ۹۷

ترجمہ - بھیانک روپ سے رہت - سرب بیاپک -
چکر ہے شستر جسکا - بلوان روپ - کھوٹے پرشونکو
ڈنڈ دینے والا - ششرت روپ - راتری کے
کرنیوالے پرمیشور کو پرنام ہے - ۹۷ ::

اکروره پیشلو دکشو دکشنه
چھمنام بره :: بدوتمو بیت بھیه
پنیه شرون کیرتنه :: ۹۸ ::

ترجمہ - شانت روپ - کومل روپ - چتر - مہا چتر
چھما کرنیوالوں میں سریشٹھ - بڑا بدوان - جاتا
رہا ہے بھے جس کا - پوتر کیرتن کا سننے والا -
جو ایشور ہے اسکو پرنام ہے - ۹۸

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

उत्तारणो दुष्कृतिहा पुण्यो दुः
स्वप्ननाशनः। वीरहा रक्षणः
शांतो जीवनः पर्यवस्थितः॥
॥९९॥

अर्थ – उद्धार करनेवाला · पापों -
का नाश करनेवाला · पवित्र · खोटे स्व
प्न का नाशक · वीरोंको मारनेवाला ·
रक्षा करनेवाला · शांत · जिवानेवाला
सर्वत्रस्थित · ऐसे भगवान को प्रणा
म है ॥९९॥

अनन्तरूपोऽनन्तःश्रीर्जितः
मन्युर्भयापहः। चतुरस्रोग-
भीरात्माविदिशोव्यादिशो-
दिशः॥१००॥

अर्थ – अंतरहितरूप · अंतरहित ·
लक्ष्मीकास्वामी · जीताहै क्रोध जिस-
ने · भयको दूर करनेवाला · चारोंदि-
शाओं में एकसार · छिपाहुआआत्मा
रूप · विदिशाओं में व्यापक · सर्वतोव्या
पक · दिशारूप भगवान को प्रणाम है ॥
॥१००॥

اُوتّارو دُشکرِتہا پنّیو دُسّپن
ناشنۂ ؛ بیرہا رکشنۂ شانتو
جیوِنہ پریہ واستھتھہ ؛ ۹۹

ترجمہ۔ اُودّہار کرنے والا۔ پاپوں کو ناش کرنیوالا۔
پوتر۔ کھوٹے سُپن کا ناشک۔ بیروں کو مارنے
والا۔ رکشا کرنے والا۔ شانت۔ جِوانے والا۔
سرب استھتھ بھگوان کو پرنام ہے ؛ ۹۹

اننت رُوپو ننتھ شریر جِتھہ
منیُر بھیاپہہ ؛ چتر سَر وگمبھیراتما
وِدِشو دیا دِشو دِشۂ ۱۰۰

ترجمہ۔ انت رہت روپ۔ انت رہت لکشمی
کا سوامی۔ جیتا ہے کرودھ جسنے۔ بھے کو دور
کرنے والا۔ چاروں دشاؤں میں ایک سار۔
چھپا ہوا آتما روپ۔ وِدشاؤں میں بیاپک۔ سرب
تو بیاپک۔ دسا روپ بھگوان کو پرنام ہے ؛ ۱۰۰

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

अनादिर्भूर्भुवोलक्ष्मीःसुवीरो
रुचिरांगदः। जननोजननज-
न्मादिःर्भीमोभीमपराक्रमः।१०१
अर्थ – जिससे पहले कोई नहीं था·
पृथिवी अंतरिक्ष लक्ष्मीरूप·सुंदर
वीर·श्रेष्ठ बाजू पहरनेवाला·जन्म
देनेवाला·सब जीवों से पूर्व है जन्म
जिसका·भयानक है पराक्रम जिस
का·ऐसे भगवान को नमस्कार है १०१

आधारनिलयोधातापुष्पहा
सःप्रजागरः।ऊर्ध्वगःसत्य
थाचारःप्राणदःप्रणवःप्र-
णः॥२॥
अर्थ – आश्रयरूपी स्थान अर्थात् पृ
थिवी है स्थान जिसका·ब्रह्मरूप·मंद
है हंसना जिसका·सदा जागनेवाला·
ऊपर को जानेवाला·श्रेष्ठ मार्ग में चल
नेवाला·प्राणों का देनेवाला·प्रणवरू
प·प्रतिज्ञा पूरी करनेवाले भगवान को
प्रणाम है॥२॥

انادِر بہُو ر بہو و لکشمیہ سُبیرو
رُچِراں گدہ :: جننو جنن جنمادِہ
بہیمو بہیم پراکرمھ :: ۱ ::

ترجمہ جس سے پہلے کوئی نہیں تھا۔ پرتھوی
انت رکش لکشمی روپ۔ سُندر بیر سریشٹھہ بازو
پھرنے والا۔ جنم دینے والا۔ سب جیووں سے
پورب ہے جنم جس کا۔ بہیانک ہے۔ پراکرم جسکا
ایسے بھگوان کو نمسکار ہے :: ۱ ::

آدہار نِلیو دہاتا پُشپ ہاسھ پرجا
گرہ :: اُوردُہگھ ستّیہ تہا چارہ پران
دہ پرنوہ پرنہ :: ۲ ::

ترجمہ۔ آشریہ روپی استہان ارتہات پرتھوی ہے
استہان جسکا۔ برھم روپ۔ مند ہے ہنسنا جسکا۔ سدا جاگنیوالا
اوپر کو جانیوالا۔ سریشٹھہ مارگ میں چلنے والا۔ پرانوں کا دینیوالا۔
پرتگیا پوری کرنیوالے بھگوان کو نمسکار ہے :: ۲ ::

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

प्रमाणप्राणनिलयः प्राणभृ-
त्प्राणजीवनः। तत्त्वंतत्त्वविदे
कात्माजन्ममृत्युजरातिगः ३

अर्थ—प्रमाण यथार्थ। प्राणोंका स्थान। प्राणोंका धारण करने वाला। प्राणों में चैतन्य सत्ता देने वाला। तत्त्व रूप। सिद्धांत का जानने वाला। आत्म रूप। जन्म और मरण और बुढ़ापे से रहित जो है उसको नमस्कार है ॥३॥

भूर्भुवःस्वस्तरुस्तारःसवित्ता
प्रपितामहः। यज्ञोयज्ञपति
र्यज्वायज्ञांगोयज्ञवाहनः॥४॥

अर्थ—पृथिवी अंतरिक्ष और स्वर्ग रूपके लोकका वृक्षरूप। अर्थात् तीनों लोक रूपी वृक्षरूप। तारने वाला। उत्पन्न करने वाला। ब्रह्मारूप। यज्ञरूप। यज्ञ अर्थात् होमका फल देने वाला। स्वामी। होम करने वाला। यज्ञ का अंग। यज्ञ का देवताओं को फल देने वाले ईश्वर को प्रणाम है ॥४॥

پرمانم پران نلیھہ پران بھرت پران
جیونہ ؛؛ تتم تتو ودیکاتما جنم مرتیو
جراتگھہ ؛؛ ۳ ؛؛

ترجمہ۔ پرمان یتھارتھ پرانونکا استھان۔ پرانوں کو دھارن کرنیوالا۔ پرانوں میں چیتن ستا دینے والا تتوروپ۔ سدہانت کا جاننے والا۔ آتماروپ۔ جنم اور مرن اور بڑھاپے سے رہت۔ جو ہے اسکو نمسکار ہے ؛؛ ۳ ؛؛

بھور بھوہ ست رستارہ سبیتا
پرپتامھہ ؛؛ یگیو یگیہ پتر یجوا یگیام
گو یگیہ باہنھہ ؛؛ ۴ ؛؛

ترجمہ۔ پرتھوی انترکش اور سرگ روپ کے لوک کا برکش روپ ارتھات تینوں لوک روپی برکش روپ۔ تارنے والا۔ اوتپن کرنے والا۔ برہما روپ یگیہ روپ۔ یگیہ ارتھات ہوم کا پھل دینے والا سوامی۔ ہوم کرنوالا۔ یگیہ کا انگ۔ یگیہ کا دیوتاؤں کو پھل دینے والے ایشور کو پرنام ؛؛ ۴ ؛؛

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

यज्ञभृद्यज्ञकृद्यज्ञीयज्ञभुग-
यज्ञसाधनः। यज्ञान्तकृद्यज्ञ
गुह्यमन्नमन्नाद एव च ॥५॥

अर्थ - यज्ञको धारण करनेवाला · यज्ञका करनेवाला · यज्ञरूप · यज्ञका भोक्ता · यज्ञको सिद्ध करनेवाला · यज्ञका नाशक · यज्ञमें गुप्तस्वरूप · अन्नरूप · अन्नके दाता परमेश्वरको प्रणाम करते भये ॥५॥

आत्मयोनिः स्वयंजातो वैखा-
नः सामगायनः। देवकीनन्द
नः स्रष्टा क्षितीशः पापनाशनः
॥६॥

अर्थ - आत्माका योनिस्वरूप · अपने आप उत्पन्न होनेवाला · वैखानस ऋषिरूप · सामवेदका गान करनेवाला · देवकीका आनन्द दाता · उत्पत्ती करने वाले · ऐसे भगवानको नमस्कार करते भये ॥६॥

یگیہ بہرد یگیہ کرد یگی یگیہ بھگ
یگیہ سادہنہ :: یگیانت کرد
یگیہ گہئے من منّادا وچا :: ۵ ::

ترجمہ۔ یگیہ کو دھارن کرنیوالا۔ یگیہ کا کرنیوالا۔ یگیہ روپ یگیہ کا بھوکتا۔ یگیہ کو سدہ کرنیوالا۔ یگیہ کا ناشک یگیہ میں گپت روپ۔ اَنّ روپ۔ اَنّ کے داتا پرمیشور کو پرنام ہے :: ۵ ::

آتم یونہ سیم جاتو ویئسوانہ
سام گاینہ :: دیوکی نندنہ
سرشٹھا چھتیشہ پاپ ناشنہ :: ۶ ::

ترجمہ۔ آتما کا یونی روپ۔ اپنے آپ اُتپن ہونیوالا۔ ویئسوانس رشی روپ۔ سام وید کا گان کرنے والا۔ دیوکی کا آنند داتا۔ اُتپتی کرنے والے بھگوان کو نمسکار ہے :: ۶ ::

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

शंखभृन्नन्दकी चक्री शार्ङ्ग-
धन्वा गदाधरः । रथांगपाणि
रक्षोभ्यः सर्वप्रहरणायुधः ॥ ७
अर्थ – पांचायण शंख को धारण क
रने वाले · नंदक नाम खड्ग का धारी ·
एक हाथ में चक्र · शार्ङ्ग धनुष है जि-
सका · गदा का धारण करने वाला कृ
ष्ण रूप · रथ का पहिया भीष्मपिताम
ह पर ले धाया सब प्रकार से · शस्त्रधा-
री को प्रणाम है ॥ ७ ॥

इतीदं कीर्तनीयस्य केशव
स्य महात्मनः । नाम्नां सह-
स्रं दिव्यानामशेषेण प्रकीर्ति
तम् ॥ ८ ॥
अर्थ – ये कीर्तन करने के योग ·
केशव महात्मा के दिव्य सहस्र ना-
म सब कह दिये ॥ ८ ॥
॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

شنکھہ بہرن نندکی چکری شارنگ
دہنوا گدادہرہ :: رتہانگ پانی
رکشوبہیہ سرب پرہرنایُدہ :: ۷ ::

ترجمہ۔ پانچاین شنکھہ کو دہارن کرنیوالا۔ نندک نام کہرگ
کا دہاری۔ ایک ہاتھہ میں چکر۔ شارنگ دہنش ہے جسکا
گدا دہارن کرنیوالا۔ کرشن روپ۔ رتھہ کا پہیا
بھیشم پتامھہ پر لے دہایا سب پرکار سے شستر دہاری
کو پرنام ہے :: ۷ ::

اِتی دم کیرتنی یسّئے کیشو سّئے
مہاتمنہ :: نامنام سہسر دبّیا
نام شیشین پرکیرتم :: ۸ ::

ترجمہ۔ یہ کیرتن کرنے کے یوگ کیشو مہاتما
کے دبیّہ سہسر نام سب کہہ دیئے :: ۸ ::

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

यइदंशृणुयान्नित्यंयश्चापि
परिकीर्त्तयेत् । नाशुभंप्राप्नु
यात्किंचित्सोमुत्रेहचमान
वः ॥९॥

अर्थ – जो इन नामों को नित्य सु
ने और जो नाम ले वह मनुष्य इस
लोक में और परलोक में किसी प्रका
र के अशुभ कार्य को प्राप्त नहीं होय
॥९॥ ९ ९ ९ ९

वेदान्तगोब्राह्मणःस्यात्क्ष
त्रियोविजयीभवेत् । वैश्यो
धनसमृद्धस्याच्छूद्रःसुख
मवाप्नुयात् ॥१०॥

अर्थ – ब्राह्मण तो वेदान्त शा-
स्त्र का ज्ञाता होय · और क्षत्रिय र-
ण में जीते · और वैश्य के धन बढ़े
और सूद्र सुख को प्राप्ति होय ॥

॥१०॥ ॥१०॥ ॥१०॥ ॥१०॥
॥९॥ ॥९॥ ॥९॥ ॥९॥

یہ اِدَم شِرنُیانِتّیَم یشچاپی پر
کیرت ایت :: ناشُبھَم پراپنُیات
کِنچِت سومُترِیھہ چہ مانوہ :: ۹ ::

ترجمہ - جو ان ناموں کو نِتّیہ سُنے اور جو نام لے
وہ مُنشّیہ اِس لوک میں اور پرلوک میں کسی پرکار کی
اشُبھ کو پراپت نہیں ہوئے :: ۹ ::

ویدانت گو براہمنّیات چھترِیو
وجئی بہویت :: ویشیو دھن سمر
دہسّیات چھدرہ سُکھہ مواپنُیات :: ۱۰

ترجمہ - براہمن تو ویدانت شاستر کا گیاتا ہوئے
اور چھتری رن میں جیتے - اور ویشیہ کے
دہن بڑھے - اور شودر سُکھہ کو پراپت ہوئے
:: ۱۰ :: ۱۰ ::

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

धर्मार्थी प्राप्नुयाद्धर्ममर्थार्थी
चार्थमाप्नुयात् । कामान
वाप्नुयात्कामी प्रजार्थी प्रा-
प्नुयात्प्रजा ॥११॥

अर्थ - धर्म का चाहने वाला ध-
र्म को पावे · धन का चाहने वाला ध
न को पावे · कामना वाले की कामना
पूरी होय · संतान के चाहने वाले को
संतान की प्राप्ति होय ॥११॥

भक्तिमान्यः सदोत्थाय शु-
चिस्तद्गतमानसः । सह
स्रं वासुदेवस्य नाम्नामेत-
त्प्रकीर्तयेत् ॥१२॥

अर्थ - जो सदा भक्ति युक्त होय उठ
कर परमेश्वर में मन लगा वासु
देव भगवान् के सहस्र नाम को
पाठ करै ॥१२॥ ॥१२॥ ॥१२॥
॥श्री॥ ॥श्री॥ ॥श्री॥ ॥श्री॥
॥ध॥ ॥ध॥ ॥ध॥ ॥ध॥

دھرمارتھی پراپنیاد دھرمے مرتھارتھی
چارتھمایپنیات ۔ کامان واپنیات
کامی پرجارتھی پراپنیات پرجا ۔ ۱۱ ۔

ترجمہ۔ دھرم کا چاہنے والا دھرم کو پاوے۔ دھن کا
چاہنے والا دھن کو پاوے۔ کامنا والے کی کامنا
پوری ہووے۔ سنتان والے کو سنتان ملے ۔ ۱۱ ۔

بھکت مانیہ سدو تھایہ شچستد گت
مانسھہ ۔ سہسرم واسدیوسیے
نامنامیتت پرکیرت ایت ۱۲

ترجمہ۔ جو سدا بھکتی یکت ہو اٹھ کر۔ پرمیشور میں
من لگا واسدیو۔ بھگوان کے سہسر نام
کو پاٹھ کرے۔ ۔ ۱۲ ۔

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

यशः प्राप्नोति विपुलं ज्ञाति
प्राधान्यमेवच। अचलांश्रि
यमवाप्नोतिश्रेयः प्राप्नोत्य
नुत्तमम्॥१३॥
अर्थ — वह वहुत जस पावे और
अपनी जाति में वड़ा कहावे। अच-
ल लक्ष्मी को पावे। सवसे अच्छा
कल्याण होय॥१३॥
नभयंक्वचिदाप्नोति वीर्य्यं
तेजश्च विन्दति। भवत्य-
रोगोद्युतिमान् वलरूपगु-
णान्वितः॥१४॥
अर्थ — और कहीं भय प्राप्त नहीं
होय। पराक्रम और तेज को प्राप्त
होय। रोगरहित। कांतिवान। व
ल और रूप। गुण। करिके युक्त
होय। ॥१४॥ ॥१४॥ ॥१४॥
॥श्री॥ श्री॥ श्री॥ श्री॥ श्री॥
॥छ॥ ॥छ॥ ॥छ॥ ॥छ॥ ॥छ॥

یشھ پراپنوتِ وِپُلم گیاتی
پرادھانیہ میو چا :: اچلام شریہ
مواپنوتی شریھ پراپنوت نُتم :: ۱۳ ::

ترجمہ۔ وہ بہت جس پاوے اور اپنی ذات میں
بڑا کہاوے اچل لکشمی کو پاوے سب سے اچھا
کلیان ہوئے :: ۱۳ ::

نہ بھیم کواچداپنوتی بیریم تیجشچہ
وِندتی :: بھوتیہ روگودُتِ مان
بل رُوپ گُنا نوِتہ :: ۱۴ ::

ترجمہ۔ اور کہیں بھے پراپت نہیں ہوے
پراکرم اور تیج کو پراپت ہوئے۔ روگ رہت
کانتی وان۔ بل اور روپ اور گُن کرکے یُکت
ہوئے :: ۱۴ ::

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

रोगार्तो मुच्यते रोगाद्बद्धो मुच्येत बंधनात्। भया न्मुच्येत भीतस्तु मुच्येता पन्न आपदः॥१५॥

अर्थ ० रोगी रोगसे छूट जाय। बंधन में पड़ा हुआ बंधन से छूट जाय। जिसको डर हुआ होय वह डर से छूट जाय। जिसको विपत पड़ रही होय वह विपत से छूट जाय। ॥१५॥

दुर्गाण्यतितरत्याशु पुरुषः पुरुषोत्तमम्। स्तुवन्नामसहस्रेण नित्यंभक्ति समन्वितः॥१६॥

अर्थ ० कठिन दुःखों से शीघ्र छूट जाय। पुरुष सहस्र नामोंस्तुति करता हुआ नित्य भक्ति से पुरुषोत्तम भगवान की। ॥१६॥

॥छ॥ ॥छ॥ ॥छ॥ ॥छ॥ ॥छ॥

روگارتو مچیتے روگات بدّہو
مچّیت بندہنات :. بھیّان
مچّیتے بھیتستو مچّیتے تاپنّ آپدہ :. ۱۵

روگی روگ سے چھوٹ جائے۔ بندہن میں
پڑا ہوا بندہن سے چھوٹ جائے۔ ڈرا ہوا ڈر
سے چھوٹ جائے۔ جسکو بپت پڑ رہی ہو وہ بپت سے
چھوٹ جائے :. ۱۵ :.

درگانتی ترتیاشو پرشہ پرشوتّم :.
استون نام سہسر یانتیہ
بھکتی سمنوتہ :. ۱۶ :.

ترجمہ۔ کٹھن دکھیوں سے شیگھر چھوٹ جائے
پرش سہسر نام استتی کرتا ہوا نت بھکتی سے
پرشوتّم بھگوان کی :. ۱۶ :.

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

वासुदेवाश्रयोमर्त्योवासु
देवपरायणः । सर्वपाप
विशुद्धात्मायातिब्रह्मस
नातनम् ॥१७॥

अर्थ - वासुदेव के आश्रय मनुष्य और वासुदेव में लगा हुआ मन वाला जीव सब पापों से छूटकर शुद्धात्मा हो· सनातन ब्रह्म में मिल जाता है ॥१७॥

नवासुदेवभक्तानामशुभं
विद्यते क्वचित् । जन्ममृ-
त्युजराव्याधिभयंनैवोप
जायते ॥१८॥

अर्थ - वासुदेव भगवान के भक्तों को कहीं अशुभ नहीं होता . और जन्म मरण और बुढ़ापा और बुढ़ापा और व्याधि रोगों का भय भी नहीं होता ॥१८॥ ॥१८॥

॥छ॥ ॥छ॥ ॥छ॥ ॥छ॥ ॥छ

باسُدیوآشریو مرتیو واسُدیو پراینہ:
سرب پاپ وِشُدّہاتما یات برہم
سناتنم :: ۱۷ ::

ترجمہ۔ واسُدیو کے آشرے منشیہ اور واسدیو میں لگا ہوا من والا۔ جیو سب پاپوں سے چھوٹ کر شُردّہاتما ہو سناتن برہم میں مل جاتا ہے ::۱۷::

نواسُدیو بھکتانام شُبھم وِدّتے
کُچت :: جنم مرتیو جرا اویادھی
بھیم نیوپ جاییتے :: ۱۸ ::

ترجمہ۔ باسُدیو بھگوان کے بھکتوں کو کہیں اشُبھ نہیں ہوتا۔ اور جنم مرن اور بُڈھاپا اور ویاہی روگوں کا بھئے بھی نہیں ہوتا ::۱۸::

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

इमंस्तवमधीयानश्श्रद्धाभ
क्तिसमन्वितः। युज्येता-
त्मासुखक्षांतिश्रीधृति-
स्मृतिकीर्तिभिः ॥१९॥

अर्थ ~ जोइसस्तवको पढ़ै श्रद्धा
और भक्तिके साथ वह सुख और -
क्षमा लक्ष्मी धीरज ज्ञान और कीर्ति
युक्त अपने आत्माको करै ॥१९॥

नक्रोधोनचमात्सर्यं नलो-
भो नाशुभामतिः। भवन्ति
कृतिपुण्यानांभक्तानांपुरु-
षोत्तमे ॥२०॥

अर्थ ~ भगवान में भक्ति करने वा
ले पुरुषों ना तो क्रोध हो और ना
बुराई और ना लोभ हो· किये हैं
पुण्य जिन्होंने ॥२०॥ ॥२०॥ ॥२०
॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥ छ
श्री श्री श्री श्री श्री श्री
॥छ॥ ॥छ॥ ॥छ॥ ॥छ॥२०॥

اِمَم اَستَوَ مدِ ہیانے شِردھا
بھکتی سمنوِتہ :: یُجّےتاتماسُکھ
شانتی شری دِہرِتسمرِت کیرتِ
بھہ :: ۱۹ :: ۱۹ ::

ترجمہ۔ جو اِس استَو کو پڑھے شردھا اور
بھکتی کے ساتھ وہ سُکھ اور چھما لکشمی دھیرج
گیان اور کیرتی یکت اپنے آتما کو کرے ::۱۹::

نکرودھو نہ چہ ماتسریم
نہ لوبھو ناشُبھا متِھ ::
بھونتِ کرت پنّیا نام بھکتا
نام پُرشوتمے :: ۲۰ ::

ترجمہ۔ بھگوان میں بھگتی کرنے والے پُرشوں
کو نا تو کرودھ ہو اور نا بُرائی نا لوبھ ہو گئے
ہیں پنّیہ جنہوں نے :: ۲۰ ::

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

द्यौः सचन्द्रार्कनक्षत्रा खंदिशो भूर्महोदधिः । वासुदेवस्य वीर्य्येण विधृतानि महात्मनः ॥२१॥

अर्थ — महात्मा वासुदेव के पराक्रम ने स्वर्गादि देवलोक चंद्रमा और सूर्य्य नक्षत्रों सहित आकाश दिशा पृथिवी समुद्र सबों को धारण कर रक्खा है ॥२१॥

ससुरासुरगन्धर्वं सयक्षोरगराक्षसम् । जगद्वशे वर्त्ततेदं कृष्णस्य सचराचरम् ॥२२॥

अर्थ — यह सारा जगत चराचर देवता असुर गंधर्व और यक्षों सहित उरग राक्षस सब कृष्ण के वस में वर्त्तमान है ॥

॥२२॥ ॥२२॥ ॥२२॥ ॥२२॥

॥७४॥ ॥७४॥ ॥७४॥ ॥७४॥ ॥७४॥

دیوہ سچندرارک نکشترا کہند شو بہور مہودد ہی ؛؛ واسدیو سئیہ بیریئے نا و دہرتانی مہاتمنہ ؛؛ ۲۱ ؛؛

ترجمہ۔ مہاتما واسدیو کے پراکرم نے سُرگ دیب لوک چندرما اور سورج نکشتروں سہت اکاش دِشا پرتھوی سمدر سبوں کو دھارن کر رکھا ہے ؛؛ ۲۱ ؛؛ ۲۱ ؛؛

سسُر اسُر گندہرباسیکشو رگ راکشسم ؛؛ جگت دِشو برتتیدم کرشنسیہ سچراچرم ؛؛ ۲۲ ؛؛

ترجمہ۔ یہ سارا چراچر جگت۔ دیوتا۔ اسر گندہرب اور یکشوں۔ سہت اُرگ راکشس سب کرشن کے بس میں برتمان ہیں ؛؛ ۲۲ ؛؛

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

इन्द्रियाणि मनो बुद्धिः सत्त्वं
तेजो बलं धृतिः । वासुदेवा-
त्मकान्याहुः क्षेत्रं क्षेत्रज्ञ-
एव च ॥२३॥

अर्थ — क्षेत्र शरीर क्षत्रज्ञ आ-
त्मा ज्ञानेन्द्रिय और बुद्धि सतोगु-
ण तेज पराक्रम धीरज ये सब म
हात्माओं ने वासुदेव भगवान ही
के आत्मा कहे हैं ॥२३॥

सर्वागमानामाचारः प्रथ-
मं परिकल्पते । आचारः
प्रथमो धर्मो धर्मस्य प्रभु
रच्युतः ॥२४॥

अर्थ — सब वेदादि शास्त्रों का
आचार पहिले कल्पना किया है
आचार अर्थात् पवित्रता से धर्म
उत्पन्न होता है धर्म से अच्युत
भगवान की प्राप्ति होजाती है ॥

॥२४॥ ॥२४॥ ॥२४॥ ॥२४॥

اِندریانی منو بدھہ ستّوم تیجو بلم
دِہرِتھہ ؛ واسدیو آتمکانیاہُھ
کشیترم کشیترگیّہ ایوچہ ؛ ۲۳

ترجمہ۔ کشیتر۔ شریر کشیترگیّہ۔ آتما۔ گیاننیدری۔
بُدّہی۔ ستوگن۔ تیج۔ پراکرم۔ دہیرج۔ یہ
سب مہاتماوں نے واسدیو بھگوان ہی کے
آتما کہے ہیں ؛ ۲۳ ؛ ۲۳ ؛

سربا گما ناما چارہ پرِتھم پرکلپتے ؛
اَچار پرِتھو دَہرمو دہرمسیہ پربھو
رچُتّے ؛ ۲۴ ؛

ترجمہ۔ سب ویدادِ شاستروں کا آچار پہلے
کلپن کیا ہے آچار ارتھات پوِترتا سے
دہرم اُتپنّن ہوتا ہے۔ دہرم سے اَچُتّ
بھگوان کی پراپتی ہوجاتی ہے ؛ ۲۴ ؛

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

ऋषयः पितरो देवा महा-
भूतानि धातवः। जङ्गमा
जङ्गमं चेदं जगन्नारायणो
द्भवम् ॥२५॥

अर्थ – ऋषि पित्तर देवता पं-
च महाभूत सम धातु जंगम चल
ने वाले जीव अजंगम तृण वनस्प
ति आदि जीव और यह जगत् ना-
रायण से उत्पन्न हुआ है ॥२५॥

योगो ज्ञानं तथा सांख्यं वि-
द्याः शिल्पादि कर्म च। वे-
दाः शास्त्राणि विज्ञानमेत-
त्सर्वं जनार्दनात् ॥२६॥

अर्थ – योग विद्या ज्ञान शास्त्र
वेदांत आदि वैसेही सांख्य शास्त्र
और चतुर्दश विद्या शिल्पादिक
र्म चारों वेद षट शास्त्र और वि-
ज्ञान शास्त्र ये सब जनार्दन भगवा
न से उत्पन्न हुए हैं ॥२६॥

رِشیہ پِترو دیوا مہا بھوتان
دھاتوہ :: جنگما جنگمم چیدم جگنّا
رائنو دبھوم :: ۲۵ ::

ترجمہ - رِشی - پِتر - دیوتا - پنچ مہا بھوت - سپت دھاتو
جنگم چلنے والے جیو - اجنگم - ترن - بناسپتی
آدِ جیو - اور یہ - جگت ناراین سے اوتپنّ
ہوا ہے :: ۲۵ :: ۲۵ ::

یوگو گیانم تتھا سانکھیم وِدّیاہ شِلپادِ
کرم چا :: ویداہ شاستران وِگیانا
میتت سربم جناردنات :: ۲۶ ::

ترجمہ - یوگ - وِدّیا - گیان - شاستر ویدانت - آدِ
ویسے ہی سانکھیہ شاستر اور چتردش وِدّیا شِلپادِ کرم
چاروں وید کھٹ درشن یعنے شاستر - اور
وِگیان شاستر یہ سب جناردن بھگوان سے
اوتپنّ ہوئے ہیں :: ۲۶ ::

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

एको विष्णुर्महद्भूतं पृथग्भूतान्यनेकशः। त्रींल्लोकान् व्याप्य भूतात्मा भुंक्ते विश्वभुगव्ययः ॥२७॥

अर्थ – एक विष्णुही विराट रूप को धारण करके भिन्न २ अनेक प्रकार के तत्वों को तीनों लोकों में व्यापक होकर पंचभूतों का आत्मा संसार को भोगने वाला अविनाशी संसार के सुखों को भोगता है ॥२७॥

इदं स्तवं भगवतो विष्णोर्व्यासेन कीर्तितम्। पठेद्य इच्छेत्पुरुषः श्रेयः प्राप्तुं सुखानि च ॥२८॥

अर्थ – यह विष्णु भगवान का स्तव व्यासजी ने कहा है जो पुरुष सुख और कल्याण को प्राप्त करना चाहे वह इसको पढ़े ॥२८॥

ایکو وِشنُور مہد بہوتم پرتھگبہوتانِ
نیک شحہ :: تریم لوکان ویاپئے
بہوتاتما بہنکتے بِشنو بہگ ویہ :: ۲۷ ::

ترجمہ۔ ایک وِشنو ہی براٹ روپ کو دہارن کرکے بِہن بِہن انیک پرکار کے تتّوں کو تینوں لوکیں بیاپک ہوکر پنچ بہوتوں کا آتما سنسار کو بہوگنے والا ابناشی سنسار کے سکھوں کو بہوگتا ہے :: ۲۷ ::

اِدم اِستوم بہگوتو وِشنور ویاسین
کیرتِتم :: پٹھید اِچھیت پُرشھ
شریہ پراپتُم سُکھانچا :: ۲۸ ::

ترجمہ۔ یہ وِشنو بہگوان کا اِستو بیاس جی نے کہا ہے جو پُرش سُکھ اور کلیان کو پراپت ہونا چاہے وہ اسکو پڑہے :: ۲۸ ::

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

विश्वेश्वरमजं देव जगतः प्रभवाप्ययम्। भजंतिये पुष्कराक्षं नतेयान्ति पराभवम् ॥२९॥

अर्थ – जो मनुष्य संसार के ईश्वर, अजन्मा प्रकाशवान् जगत की उत्पत्ती करने वाले कमलनयन को भजते हैं वे मनुष्य कभी हार को नहीं प्राप्त होंय उनकी सदां जीत रहती है ॥२९॥

अर्जुन उवाच। पद्मपत्रविशालाक्ष पद्मनाभ सुरोत्तमम्। भक्तानामनुरक्तानां त्राताभव जनार्दन ॥३०॥

अर्थ – अर्जुन बोले। हे कमल के पत्ते के समान बड़े नेत्रवाले· हे कमल नाभ· हे देवताओं में उत्तम· बड़े ही भक्तों की पीड़ा दूर करने वाले आप के अनुरागी स्नेही भक्तों के आप रक्षा करने वाले होओ ॥ ३०॥

بشویشوٗر مجم دیو سے جگتھہ پربھواپیم

بھجنتے پشکراکشم نتے یانتی پراہوم ۲۹

ترجمہ۔ جو منش سنسار کے ایشور اجنما پرکاش وان جگت کی اوتپتی کرنے والے کمل نین کو بھجتے ہیں وے منش کبھی ہار کو نہیں پراپت ہویں اُن کی سداں جیت رہتی ہے ۳۰

ارجنوٗ باچا پدم پتر وشالاکشے

پدم نابھ سُروتّم بھکتانامُن

رکتانام تِراتا بہو جناردنا ۳۰

ترجمہ۔ ارجن بولا۔ ہے کمل کے پتّے کے سماں بڑے نیتر والے۔ ہے کمل نابھ۔ ہے دیوتاؤں میں اُوتّم بڑے ہی بھکتوں کی پیڑا دور کرنے والے آپ کے انُراگی ارسنیہی بھکتوں کے آپ رکشا کرنے والے ہو جاؤ۔ ۳۰۔

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

श्रीभगवानुवाच। योमांनामसहस्रेण स्तोतुमिच्छति पाण्डव। सोहमेकेनश्लोकेन स्तुतएवनसंशयः॥३१॥

अर्थ — भगवान बोले। हे अर्जुन जो मुझको सहस्र नामों से स्तुति करने की इच्छा करता है सो मैं एकही श्लोक से स्तुति किया जाता हूं इस में सन्देह नहीं॥३१॥

شری بھگوان باچا ؛ یوماں نام سہسرینا استوت مچھت پانڈوا ؛ سوہمیکین اشلوکے نا استت ایون سنشیھ ؛ ۳۱ ؛

ترجمہ بھگوان بولے ۔ ہے ارجن جو مجھکو سہسر ناموں سے استتی کرنے کی اچھا کرتا ہے سو میں ایک ہی اشلوک سے استتی کیا جاتا ہوں اس میں سندیھ نہیں ہے ؛ ۳۱ ؛

नमोस्त्वनन्ताय सहस्रमूर्तये सहस्रपादाक्षिशिरोरुबाहवे। सहस्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते सहस्रकोटी युगधारिणेनमः॥३२॥

अर्थ — अंतरहित·अनेकमूर्ति·अनेकपाद·औरअनगिनतनेत्र·अनंतसिर·जांघ·हाथअनंत औरसहस्रों नाम वाले पुरुष निरंतर रूप सहस्रों और क्रोड़ों जुगों के धारण करने वाले तेरे अर्थ नमस्कार है॥३२॥

نمو ستونتا ئے سہسر مورتئے سہسر پاداکش شرورباہوے ؛ سہسر نامنے پرشائے شاشوتے سہسر کوٹی یگ دھارنے نمہ ؛ ۳۲ ؛

ترجمہ ۔ انت رہت ۔ انیک مورتی انیک پاد ۔ اور اگنت نیتر انت سر جانگھ ۔ ہاتھ انت ۔ اور سہسروں نام والے پرش نرنتر روپ ۔ سہسروں اور کروڑوں جگوں کے دھارن کرنیوالے تیرے ارتھ نمسکار ہے ؛ ۳۲ ؛

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

नमः कमलनाभाय नमस्ते
जलशायिने । नमस्ते केश-
वानन्त वासुदेव नमोऽस्तु ते
अर्थ – कमलनाभ भगवान के अ-
र्थ नमस्कार · जलशायी तेरे को न-
मस्कार है केशव है अनंत तेरे अर्थ
नमस्कार है समूतों में वसने वाले-
वासुदेव तेरे अर्थ नमस्कार है ॥३३॥

वासनावासुदेवस्य वासि-
तं भुवनत्रयम् । सर्वभूत
निवासीनां वासुदेव नमो-
स्तु ते ॥३४॥

अर्थ – हे वसुदेव हे प्राणों के स्वा-
मी त्वया वासना त्वतियार्थ प्रयमान
भुवनत्रयं वासितं आपने अपनी इ-
च्छा से तीनों भुवनों को वासा कर र-
क्खा है हे वासुदेव सर्वभूत निवासी
जो आप हो सो (इनां) कामादिकों को
(स्य) घातकर्मणि) नाशकरो · आप
को नमस्कार है ॥३४॥

نمہ کمل نابہائے نمستے جل شائینے
نمستے کیشوانَنتے باسُدیو
نمو ستُتے ؛؛ ۳۳ ؛؛

ترجمہ کمل نابھ بھگوان کے ارتھ نمسکار جل شاسی
تیرے کو نمسکار ہے کیشو ہے ننت تیرے ارتھ نمسکار-
ہے سبھوتوں میں بسنے والے باسدیو تیرے ارتھ کو نمسکار ہے ۳۳-

باسنا بُسدیو سیّے واسِتم بہوونترّیم ؛؛
سرب بہوت نواسی نام باسُدیو نمو ستُتے ۳۴

ترجمہ ہے باسدیو ہے پرانوں کے سوامی تو باباسنا
تر تیار ہنے پر یہ ماں بہونترّیم باسِتم آپ نے
اپنی اچھّا سے تینوں بہونوں کو باسا کر رکھا ہے
ہے باسُدیو سرب بھوت نواسی جو آپ ہو سو
(امی نام) کامادِکوں کو (سیئے) شانت کرمنی ناش
کرو آپ کو نمسکار ہے ؛؛ ۳۴ ؛؛

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

नमोब्रह्मण्यदेवायगोब्रा-
ह्मण हितायच । जगद्धि-
तायकृष्णायगोविन्दाय
नमोनमः॥३५॥

अर्थ – दयाकरनेवाले देवताके अ-
र्थ नमस्कारहै और गौब्राह्मणोंके हित
कारी संसारका भला करने वाले कृष्ण
गोविंदके अर्थ वारम्वारनमस्कार है ॥
॥३५॥

आकाशात्पतितंतोयंयथा
गच्छतिसागरे । सर्वदेव
नमस्कारःकेशवंप्रतिग-
च्छति॥३६॥

अर्थ – जैसे आकाश से पड़ा हु-
आ जल समुद्र में चला जाता है· तै-
से ही भगवान् को की हुई नमस्का
र सब देवताओं को पहुंचे ॥३६॥

॥३६॥ ॥३६॥ ॥३६॥ ॥३६॥ ॥
॥७॥ ॥७॥ ॥७॥ ॥७॥

نمو برہمن دیوائے گو براہمن
ہتائے چا: جگدہتائے
کرشنائے گوبندائے نمونمہ :: ۳۵

ترجمہ۔ دیا کرنیوالے دیوتا کے ارتھ نمسکار ہے۔ اور
گو براہمنوں کے ہتکاری سنسار کا بھلا کرنیوالے کرشن
گوبند کے ارتھ نمسکار ہے :: ۳۵ ::

آکاشات پتتم تویم یتھا گچھت
ساگرے :: سرب دیو نمسکارہ
کیشوم پرت گچھتی :: ۳۶ ::

ترجمہ۔ جیسے آکاش سے پڑا ہوا جل سمدر
میں چلا جاتا ہے۔ تیسے ہی بھگوان کو کی ہوئی
نمسکار سب دیوتاؤں کو پہونچے :: ۳۶ ::

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

सएषनिष्कण्टकः पन्था यत्र सम्पूज्यतेहरिः । कूपथन्तं विजानीयाद्गोविन्द रहिताऽगवम् ॥ ३७ ॥	ایش نِش کنٹکھ پنتھا یتر سمپوجتے ہرہ ؛؛ کپتھنتم وِجانی یاد گوبند رہتاگمم ؛؛ ۳۷ ؛؛
अर्थ – जहाँ हरिका पूजन किया जाता है येही बिना कांटों का मारग है और उसीको खोटा मारग जानो जो शास्त्र गोविंद की कीर्त्ति से रहित है ॥ ॥ ३७ ॥	ترجمہ۔ جہاں ہری کا پوجن ہوتا ہے یہی بنا کانٹوں کا مارگ ہے۔ اور اُسی کو کھوٹا مارگ جانو جو شاستر گوبند کی کیرتی سے رہت ہے ؛؛ ۳۷ ؛؛ ۳۷ ؛؛
सर्ववेदेषुयत्पुण्यंसर्वतीर्थेषुयत्फलम् । तत्फलंसमवाप्नोतिस्तुत्वादेवंजनार्दनम् ॥ ३८ ॥	سرب ویدیشُو یت پُنیم سرب تیرتھیشو یت پھلم ؛؛ تت پھلم سمواپنوتی استُتّوا دیوم جناردنم ؛؛ ۳۸ ؛؛
अर्थ – जो पुण्य चारों वेदों में और सब तीर्थों के करने में कहा है उसी फलको भगवान् की स्तुति करके मनुष्य प्राप्त होता है ॥ ३८ ॥ ॥	ترجمہ۔ جو پُنیہ چاروں ویدوں میں اور سب تیرتھوں میں کرنے کا ہے اُسی پھل کو بھگوان کی استُتی کر کے پراپت ہوتا ہے۔ ۳۸
॥ ३८ ॥ ॥ ३८ ॥ ॥ ३८ ॥ ॥ ३८ ॥ ॥ ५१ ॥ ॥ ५१ ॥ ॥ ५१ ॥ ॥ ५१ ॥	

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

योनरः पठते नित्यं त्रिका-
लं केशवालये । द्विकालं
मेककालंवा क्रूरं सर्वं व्य-
पोहति ॥३९॥

अर्थ – जो मनुष्य इसको भगवान
के मंदिर में बैठकर नित्य तीन सम
य वा दो समय सायंकाल और ,
प्रातःकाल में वा एक समय प्रात
काल ही पाठ करे वह सारी क्रूरता
को दूर करै ॥३९॥

दह्यन्ते रिपवस्तस्य सौम्याः
सर्वे सदा ग्रहाः । विलियं-
ते च पापानि स्तवे ह्यस्मि-
न्प्रकीर्तिते ॥४०॥

अर्थ – इस स्तोत्र के पढ़ने वाले-
के शत्रु आपही जल जाते हैं-और
सब ग्रह शांति हो जाते हैं-और स
ब पाप नष्ट हो जाते हैं ॥४०॥ ४०॥

॥छ॥ ॥छ॥ ॥छ॥ ॥छ॥

یو نرہ پٹھتے نتیم ترکالم کیشوالیے ::
دوکالم میک کالم واکرورم
سربم بوپوہتی :: ۳۹ ::

ترجمہ۔ منش اسکو بھگوان کے مندر میں بیٹھ کر
نتیہ تین سمے وادو سمے۔سایم۔اور پراتہ
کال میں وا ایک سمے پرات ہی پاٹھ کرے وہ
ساری کرورتا کو دور کرے :: ۳۹ ::

دہینتے رپ وستسے سومیاہ
سربے سداگرہاہ :: ویلینتے چہ
پاپانی استوے ہیسمن پرکیرتتے :: ۴۰

ترجمہ۔ اس استوتر کے پاٹھ کرنے والے
کے شترو اپ ہی جل جائیں اور سب گرہ
شانت ہو جائیں پاپ نشٹ ہوں :: ۴۰ ::

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

येनध्यातंश्रुतोयेनयेनायं-
पठितस्तवः। दत्तानिसर्वदा-
नानिसुराःसर्वेसमर्चिताः॥
॥४१॥
अर्थ – जिसने इस स्तव का पाठ कि-
या और जिसने सुना और जिसने ध्या
न से ध्याया उसने सब दान दिये औ
र सब देवताओं का अर्चन कर लिया-
॥४१॥ ॥४१॥ ॥४१॥ ॥४१॥

इहलोके परे वापि न भयं वि-
द्यते क्वचित्। नाम्नां सहस्रं
यो धीते द्वादश्यां मम सन्नि-
धौ ॥४२॥
अर्थ – जो मनुष्य द्वादशी के दिन
मेरे पास बैठकर सहस्रनाम के पाठ
करै उसको इस लोक में और परलो-
क में कहीं भय नहीं होय ॥४२॥
॥४२॥ ॥४२॥ ॥४२॥ ॥४२॥
॥ध्रु॥ ॥ध्रु॥ ॥ध्रु॥ ॥ध्रु॥ ॥ध्रु॥

این دہیاتم شرتو اینا اینا یم
پٹھتستوہ :: دتّانِ سرب دانانی
سُراہ سربے سمرچتاہ :: ۴۱ ::
ترجمہ۔ جسنے اس استو کا پاٹھ کیا اور جس نے
سُنا اور جسنے دہیان سے دہیایا اُسنے
سب دان دِئے اور سب دیوتاؤں کا پوجن
کرلیا :: ۴۱ :: ۴۱ :: ۴۱ ::

اِہ لوکے پریواپی نہ بہیم وِدّتے
کچِت :: نامنام سہسرم یو دہیتے
دوادشیام مم سنّدہو :: ۴۲ ::
ترجمہ۔ جو دوادشی کے دن میرے پاس
بیٹھ کر سہسر نام کے پاٹھ کرے اس کو اس
لوک میں اور پرلوک میں کہیں بہے نہیں
ہووے :: ۴۲ :: ۴۲ :: ۴۲ ::

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

सनिर्दहति पापानि कल्पकोटिशतानि च । अश्वत्थसन्निधौ पार्थ कृत्वा मनसि केशवं ॥४३॥

अर्थ – हे अर्जुन जो मन में भगवान को ध्यान करके पीपल के पास स्थित होके इसको पढ़े वह मनुष्य कोटि कल्प के किये हुए पापों को भी जला देता है ॥४३॥

पठेन्नामसहस्रं तु गवां कोटि फलं लभेत् । शिवालये पठेन्नित्यं तुलसीवनसंस्थितः ॥४४॥

अर्थ – महादेवजी के मन्दर में वा तुलसी के बन में बैठकर जो सहस्रनाम का पाठ करै वह कोटि गऊ के फल को पावे ॥४४॥

नरो मुक्तिमवाप्नोति चक्रपाणिर्वचो यथा । ब्रह्महत्यादिकं पापं सर्वं पापं विनश्यति ॥४५॥

अर्थ – मनुष्य मुक्ती को प्राप्त होजाता है यह वचन भगवान का है और ब्रह्महत्यादिक पाप नाश होजाते हैं ॥४५॥

इति विष्णुसहस्रनामसटीकासं

سنِردہت پاپانی کلپ کوٹی شتانچا
اشوتّھہ سندِہو پارتھے کرتوا منسِ
کیشوم ؞ ۴۳ ؞

ترجمہ۔ ہی ارجن جو من میں بھگوان کو کرکے پیپل کے پاس استت ہوکر اسکو پڑھے وہ مُنش کوٹ کلپ کے کیے ہوئے پاپوں کو بھی جلا دیتا ہے ؞ ۴۳ ؞

پٹھے نام سہسرم تو گوام کوٹی پھلم
لبھیت ؞ شِوائے پٹھے نتّیم تلسی
بن سنستھہ ؞ ۴۴ ؞

مندر میں وا تلسی کے بن میں بیٹھکر جو سہسر نام کا پاٹھ کری وہ کوٹ گو کے پھل کو پاوے ؞ ۴۴ ؞

نرو مکتِ مواپنوتی چکرپانِروچو یتہا ؞
برہمہ ہتّیادِکم پاپم سربم پاپ
ونشتی ؞ ۴۵ ؞

ترجمہ منُش مکتی کو پراپت ہوتا ہی یہ بچن بھگوان کا ہی اور برہمہ ہتّیادِک پاپ ناش ہو جاتے ہیں ؞ ۴۵ ؞
یہ وشنو سہسر نام معہ ترجمہ تمام ہوا

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

[illegible] دو دکان [illegible]

[illegible] ت بارہوں اسکند
[illegible] ل بج ین
سری کرشن جی کی تمام لیلا میں
درج ہیں جو ایک نہایت عمدہ
سلیس بھاکھا زبان میں معہ تصاویر
چھاپی گئی ہے -

سریمد بھاگوت بارہوں اسکندھ
مصنف گنپت رائے کرت معہ تصاویر

بھاگوت منظوم جگناتھ خوشتر
لشن نامہ عرف بھاگوت سار
دم اسکند سریمد بھاگوت مصنف
دیوان سردار سنگھ

ہندی بھاگوت پورا ترجمہ بارہوں
چھند نثر جو کہ مہاراج کشمیر والے نے
پریم ڈی ہے قیمت

ترجمہ ساگر بھاگوت کے دشم اسکند کا
بہیں سری کرشن کی لیلا درج ہیں
منظوم

نظر با [illegible] فارسی بانت رائے
تلسی [illegible] بارہوں اسکند
ناگری رامائن مہا کوی [illegible]
یضاً رامائن کا ترجمہ
یضاً [illegible] جی نظم
[illegible] دھ مصنف سکھ دیو
[illegible]

[illegible] جو [illegible] پدم [illegible] کی
[illegible] بھگتی کو بک
[illegible] گیا ہے جو کہ با آسانی
[illegible] آ سکتا ہے کیونکہ تلسی اس کا
[illegible] بڑھے [illegible] بھی سمجھ میں [illegible]

جو اپنی خوبی کے سبب
ہاتھوں ہاتھ فروخت ہو گئی
کاغذ باقی ہیں فوراً منگا لو ورنہ
افسوس ہو گے -
بال کانڈ - اجودھیا کانڈ کشکندہ کانڈ
سندر کانڈ - اوتر کانڈ
تلسی کرت رامائن نظم اردو مصنف
شنکر دیال فرحت

ایضاً جگناتھ خوشتر
تلسی کرت رامائن بہار نظم
رامائن سور کرت
رامائن ادھیاتم فارسی نثر
رامائن سیدل فارسی معروف گلستان
رامائن اردو نثر ساتوں کانڈ
رامائن بالمیکی اردو بھاشا نثر
ساتوں کانڈ

مہابھارت [illegible] پرب اردو
ایک صفحہ میں اصل سنسکرت اور
دوسرے صفحہ پر اس کے معنی اردو
معہ نمبر اشلوک چھاپا گیا ہے
" صرف شانتی پرب
براہمن گیتا مہابھارت کی
بشنو سہسر نام مہابھارت
مہابھارت منظوم اردو
بتوا پدیش اردو
کتاب بست نرائن سوامی
" نظم
بہگت مال معہ فرہنگ
" اجامل کرت
ہنومان چالیسہ [illegible]

کایستھ ادیتی
کایستھ ہرن نرنی
مخزن برہم گیان آئینہ مذہب ہنود
شیو پران نظم
جنم ساکھی اردو
بہار بندرابن
مجموعہ بسنتوتی
سائیں کے سو خیال معروف بہ
بوستان خیالات گوہر دو حصہ
خیالات شاہ تادین یعنی خیال دیوانی
برہگیاں
لاونی برہگیاں یعنی بنارسی گوکل
کاشی نریس کے خیال مرہٹی دو حصہ
بارہ ماسی جس میں کرشن جی کی لیلا
لاونی و خیال ہیں مصنف لالہ
سکھ لال سنگھ دو حصہ

بار لو پور [illegible] دو حصہ [illegible]
عمدہ بھگوت بھگتی کی کہانیاں
[illegible] کہ بغیر ختم کئے کتاب
چھوڑنے کو جی نہ چاہے
بشن بھگتی یہ کتاب جوگ بسہا سر
کرم کانڈ اپاسنا گیان کی لیلا
جس کا دل ہر اس [illegible] کو ہے
بھگت لیلا اردو - یہ کتاب
بھگتوں کی ان لیلاؤں اور
استت سے بھری ہے جو وقتاً فوقتاً
نتائج حاصل کرنے کے لئے یا کسی
مصیبت کے رفع کرنے کے لئے

کرم وچن اور درشن کا بیان
غنچہ بے نظیر جس میں بھجن وہولی
ٹھمریاں غزل ملار استوتی
وغیرہ ہیں
خوشحال لال اس چھوٹے سے
رسالہ میں کبیر داس جی کے بھجن
ہیں قیمت
بارہ کھڑی کشن داس
بارہ کھڑی ہردیو
بارہ ماسہ رامچندر
بارہ ماسہ شہزادہ شاہ
بارہ ماسہ ہرنام
بارہ ماسہ رکمنی
بارہ ماسہ الہ بخش
بارہ ماسہ بہرت
بارہ ماسہ بینی مادھو
بارہ ماسہ سوتی رام
بارہ ماسہ روشن لال
مجموعہ بارہ ماسہ
بارہ ماسہ مردیکوک
بارہ ماسہ عنایت علی
بارہ ماسہ سندر کلی
بارہ ماسہ رامائن رام چندر
جی جو ناتھ کرت
بارہ ماسہ رامائن بالمیکی
مصنف لالہ سکھ لال سنگھ شاعر
[illegible] بارہ [illegible]
[illegible] کا [illegible]

اردو کتب کے [illegible] کہ ہمارے ہاں سب قسم کی کتابیں بذریعہ ویلیو پی ایبل جہاں چاہیں روانہ ہو سکتی ہیں

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri



CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri